Digitized by eGangotri

मगन रहु चोला

अन्नपूर्णानन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

Acc. No 24179
Cost Rs. 2.50
Date 30.12

प्रकाशक
आनंद पुस्तक भवन
पहड़िया, वाराणसी–२
कार्यालय—औसानगंज, वाराणसी–१

Sri Pertap Singh Library, Srinagar

H 831
A 62 M

तीसरा संस्करण
१९६०
दो रुपया पचास नया पैसा

1960
2.50

SPS
891.433 A 62 M
24179

मुद्रक
बैजनाथ प्रसाद
कल्पना प्रेस
रामकटोरा रोड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

647
A157

माता आनन्दी को
अपनी प्यारी अम्मा को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

Acc. No 24179
Cost Rs. 2.50
Date 30.12

Sri Pertap Singh Library, Srinagar

प्रकाशक
आनन्द पुस्तक भवन
पहड़िया, वाराणसी–२
कार्यालय—औसानगंज, वाराणसी–१

H 83.1
A 62 M

तीसरा संस्करण
१९६०
दो रुपया पचास नया पैसा

1960
2.50

SPS
891.433 A 62 M
24179

मुद्रक
बैजनाथ प्रसाद
कल्पना प्रेस
रामकटोरा रोड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

647
A157

माता आनन्दी को
अपनी प्यारी अम्मा को

स्कैन्ड/Scanned

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सूची

१	अँगरेज़ी अक्षर ओ	१
२	पं० बिलवासी मिश्र	६
३	क्लब की वार्त्ता	११
४	घास-ताड़ सम्वाद	१६
५	बिल्लौर-सी खोपड़ी	२२
६	मुजरा या लेक्चर	३१
७	सभ्यताका शिखर	३६
८	गोरीका पति गोरिल्ला	४७
९	सुधारोंका शिखर	५२
१०	नाकोंदम	५७
११	गदहपचीसी	६४
१२	कौवारोर	७१
१३	घमासान	७७
१४	साढ़ेसाती	८४
१५	क्यासे क्या	८८
१६	कर्ण-प्रतिज्ञा	९५
१७	मगन रहु चोला	१०२

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मगन रहु चोला

१

अँगरेज़ी अक्षर ओ

कौड़ी-कौड़ी माया बटोरकर उन्होंने बैंकमें जमा किया था। एक-एक पैसेको वे दाँतके बल पकड़ते थे। रातके समय उनके यहाँ दालमें हल्दी नहीं पड़ती थी। किसी निकट सम्बन्धीके मरनेकी आशा होती थी तो उसके दसवाँके इन्तेज़ारमें अपनी हजामत रोक रखते थे। किसी निर्जन सड़कपर निकल जाते थे तो पैरोंसे जूते निकालकर रुमालमें बाँध लेते थे। जबतक पानी पीनेसे पेट भरता था तबतक खाना नहीं खाते थे। अन्तमें पाँच महीने बीमार रहकर ठीक पंचकके अवसरपर पंचत्वको वे प्राप्त हुए और मेरी पाँचों उँगली घीमें छोड़ गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसमें सन्देह नहीं कि मुझे अपना उत्तराधिकारी बनाकर उन्होंने मेरा लोक और अपना परलोक बनाया। स्वयम् उन्हें कोई नामलेवा और पानीदेवा न था; इसलिये मुझ निकम्मेको अपनी गठरी सौंपकर उन्होंने समझदारी ख़र्च की। मैं हृदयसे उनका उपकार मानता हूँ। यहाँ वे मेरे दूरके चचा थे, ईश्वर करे स्वर्गमें वे इन्द्रके सगे चचा हो जायँ। मुझे विश्वास है कि उनकी सम्पत्तिको ख़र्च कर डालनेमें मैं अपनेको पूरा समर्थ पाऊँगा।

उन्हें आँख मूँदते देर न हुई कि मैं एक अच्छा ख़ासा छैल-चिकनिया बन बैठा। गाढ़ेकी बग़लबंदी फेंककर मैंने तनज़ेबका चुन्नटदार कुर्त्ता धारण किया। पैरोंमें चमरौधाकी जगह चर्रमर्र-ध्वनि-युक्त विलायती पम्पशू बहार देने लगा। सरपर जहाँ पहिले चीटियाँ आसानीसे रेंग सकती थीं वहीं अब फुलेलसे चुपड़े हुए बालोंका 'सुन्दरवन' नज़र आने लगा।

मेरी अवस्था बाईस वर्षकी थी पर शादी अभी तक नहीं हुई थी। कारण यह था कि गो मेरी गणना देशकी मर्दुमशुमा-रीमें अवश्य हो जाती थी पर अपने घरमें और अपने समाजमें मेरी गणना शून्यके बराबर थी। पर अब चचाके रुपयोंने मेरे लिए मेरी दुनियाँ बदल दी। उन्होंने अपनी चलाचलीके समय मुझे काशी विश्वनाथका मन्दिर समझकर सोनेसे मढ़ दिया था। यह सभी जान गये कि इसे चचाकी दौलत हाथ लगी है। लोग मेरी शादीके लिए मुँहके बल गिरने लगे। जो मुझे खोटा सिक्का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

समझते थे वही अब मुझे हाथोंहाथ लोकनेके लिए तैयार हो गये।

इस समय तक मेरी शादीके दर्जनों पैगाम आ चुके थे। लोग दो-दो चार-चारके झुण्डमें मुझे देखने भी आने लगे—कभी ब्राह्मण और नाई तो कभी लड़कियोंके बाप, चचा और भाई। कुछ लोग भुलावा देकर मुझे अपने मकान भी लिवा जाते थे जिसमें उनके घरकी स्त्रियाँ भी मेरे रूपरङ्गकी परख कर सकें। मेरे एक साथीने एक सज्जनसे पाँच रुपये वसूल किये—सिर्फ़ इस लिए कि वह मुझे बहकाकर ले गया और कुछ देरतक उनके मकानके सामने टहलाता रहा।

इन सब बातोंके होते हुए भी मेरी शादी तय होनेमें पूरा सालभर लग गया। कसूर मेरा और मेरी माँका था। जितनी शादियाँ आती थीं सबमें कुछ-न-कुछ दोष निकल जाता था। मेरी माताको नाटी लड़कियाँ नापसन्द थीं—वे कहती थीं कि जो बहू लम्बे डग न मार सकेगी वह घर-गृहस्थीका काम क्या सम्हालेगी। इसके विपरीत मुझे लम्बी औरतें नापसन्द थीं—जिनके कानमें कोई प्रेमकी बात कहनी हो तो पंजोंपर उचकना पड़े। फिर एक अड़चन यह भी थी कि किसी ग़रीब ख़ानदानमें शादी करना मैं अपनी शानके ख़िलाफ़ समझता था और धनी परिवार वाले जो आते थे वे अपनी सारी सम्पत्ति मुझे दहेजमें देकर खुद भिखमंगे हो जानेपर राज़ी नहीं होते थे।

जहाँ कहींसे भी मेरी शादीकी बातचीत आयी मैं सभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जगह पसन्द किया गया, सिवा एक जगहके। इसमें मेरा कोई क़सूर न था पर तब भी इससे मेरे दिलको कुछ ठेस जरूर लगी। यह उस समयकी बात है जब मैं शुरू-शुरू शादीके अखाड़ेमें चचा साहबकी दौलत लेकर उतरा था। दोपहरका वक्त था। मैं सोया हुआ था। मेरे नौकरने आकर मुझे जगाया कि बाबू आपसे एक शख्स मिलना चाहते हैं। मैं आँख मलता हुआ बाहर आया। देखा कि एक अपरिचित व्यक्ति मुझसे मिलनेके लिए बैठा हुआ है। एक बिलकुल अनजान आदमीको देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि यह कौन है और मुझसे क्या चाहता है। मुँहको बतौर खोह या कन्दराके खोल लेना और कुछ देरके लिए खुला छोड़ देना सदासे आश्चर्यकी उपयुक्त मुद्रा मानी गयी है; इसलिए बड़ा सा मुँह खोलकर मैं उसकी ओर निहारने लगा। इसी बीचमें उसने अपने जेबसे एक जेबी केमेरा निकालकर मेरा Snap-shot ले लिया और चलता बना—मैं मुँह खोले उसकी ओर देखता ही रह गया। उसके चले जानेपर ज्ञात हुआ कि किसी दूरस्थित सज्जनने—जिसे अपनी लड़की ब्याहनी थी—इस व्यक्तिको इसी लिए भेजा था कि वह मेरी फोटो ले आवे, जिसके पसन्द आ जानेपर शादीकी बातचीत शुरू की जाय।

यह Snap-shot जब छपकर तैयार हुआ तो उसमें मेरा मुँह अंग्रेज़ी अक्षर O ओकी तरह खुला दिखायी पड़ा। यही फोटो उक्त सज्जनके घरवालोंके आगे पेश किया गया। उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और उनकी स्त्रीने तो मेरे खुले हुए मुँहको विशेष आपत्तिजनक न समझा पर जब स्वयम् लड़कीने उस फोटोको देखा तब वह सहम गयी और लज्जा छोड़कर उसने अपनी मातासे कहा कि मैं हरगिज़ इस शख्सके साथ शादी न करूँगी—इसका खुला हुआ मुँह साफ़ गवाही दे रहा है कि यह कोई बहुत बड़ा लण्ठ या लबाड़िया है।

मैं उस कम्बख्त लड़कीकी बुद्धिको क्या कहूँ! उसे सोचना चाहिये था कि खुला हुआ मुँह एक आकस्मिक या अधिकसे अधिक एक अनियमित घटना मात्र है, किसी परम्परागत या संस्कारबद्ध कुचेष्टाका परिचायक नहीं है। खुलना और बन्द होना मुँहका स्वाभाविक धर्म्म है। खुले हुए मुँहसे मुँहकी विकरालता भले ही बढ़ जाती हो पर उससे दाँत काटनेकी आदत नहीं सिद्ध होती। मुँह खुला था तो खुला रहने देती, शादीके बाद उसे बन्द करनेका उपाय सोचती।

मुझे जब पूरा हाल मालूम हुआ कि लड़कीने मुझे क्यों और कैसे नापसन्द किया तब मुझे बड़ा क्रोध आया और मन ही मन मैंने—सज्जनोचित शब्दोंमें—उसे हरामज़ादी आदि सुन्दर नामोंसे पुकारा। यह संसार भी बड़े घपलेकी जगह है। सदा मुँह बन्द रखिये तब तो लोग बेवकूफ समझते ही हैं; और मुँह खुला रखिये तब भी लोग बेवकूफ समझते हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

२

पं० बिलवासी मिश्र

जम्बू नामक द्वीपके भारतवर्ष नामक खंडमें—अवधके ऊपर और तराईके नीचे—हिन्दुओंका एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है जिसका नाम है बहराइच। यहाँ गाजीमियाँ नामके एक सिद्ध महापुरुष हो गये हैं जिनके दर्शन पूजाका बड़ा माहात्म्य माना जाता है। हर साल हज़ारों हिन्दू यहाँ आकर परमार्थ-चिन्तनका लाभ उठाते हैं। एक अर्थशास्त्रीने पता लगाया है कि जितना फूल यहाँ गाजी-मियाँकी दरगाहमें प्रतिवर्ष हिन्दू स्त्रियाँ चढ़ाती हैं उन्हें बटोरकर यदि उनसे शहद निकाला जाय तो इतना काफ़ी शहद तैयार हो सकता है कि हिन्दू महासभा उसे अपने प्रस्तावोंमें लगाकर सदियों तक आनन्दपूर्वक चाट सकती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यहीं बहराइचमें मेरी शादीकी बात पक्की हो रही थी और देनलेनकी चर्चा छिड़ गयी थी। लड़कीके पिताके पास अकूत धन था। अभी तक इतना तय पाया था कि शादीमें मुझे १ बीबी, २ इलाक़े, ३ मोटर, ४ मकान, ५ घोड़े, ६० हज़ार नक़द और ७० हज़ारके ज़ेवर मिलेंगे।

यह सब बहुत ठीक था, सिर्फ़ एक बात गड़बड़ थी। किसी मत्स्य-भोजीसे पूछिये कि उसके प्रिय खाद्यमें इतने काँटोंका प्राचुर्य्य क्यों है ? इस संसारमें मिसरीमें फाँस वाली बात हर जगह पायी जाती है। मुझे उड़ती हुई ख़बर लगी कि लड़की रूप-रंगमें त्रिजटाकी सगी सगोतिन है।

मैंने तो समझा था कि सोनेकी चिड़िया हाथ लगी पर इस समाचारने मेरी सारी आशाओंपर पानी फेर दिया। इस बातपर पूरा विश्वासकर लेनेके पहिले अब यह ज़रूरी हो गया कि इसकी काफ़ी छानबीन की जाय। अपने किसी ख़ास आदमीको भेजकर इसका अनुसन्धान कराना उचित जान पड़ा। मैंने इस सम्बन्धमें अपने मित्र पं० बिलवासी मिश्रसे मदद लेनेका निश्चय किया।

लड़कपनमें बिलवासीजीसे मेरा धौल-धप्पड़का रिश्ता रहा और अब वे मेरे खास दोस्तोंमें हैं। मेरी तरह वे भी अपने घर-में पड़े-पड़े सिर्फ़ भोजन और डासनसे काम रखते हैं। भेद इतना है कि वे लेखक और कवि हैं और मैं एक भलाआदमी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हूँ। उन्होंने अपनी लेखनीके बूतेपर साहित्य-वन-विहङ्ग और साहित्यानन्द-सन्दोह आदिकी उपाधियाँ प्राप्त की हैं। ये लाखोंमें एक आदमी हैं। जिस समय इनका पूरा परिचय संसारको प्राप्त हो जायगा उस समय लोग गली-गली इनकी जै बोला करेंगे। कुछ काम इनके ऐसे हैं जिन्हें अगर इतिहासकी अमर सामग्री कही जाय तो अत्युक्ति न होगी। उदाहरणके लिए ये लालटेनकी बत्ती अपने अस्तुरेसे काटते हैं। कोबरापालिश और झाड़ूकी सींकसे इन्होंने दावात और क़लमका काम लिया है। ठाकुरजीकी आरती इन्होंने कई बार मोमबत्तीसे की है। पानमें सुपारी नहीं रहती तो छुहारेका बीज काटकर डाल लेते हैं।

मैं दोपहरके समय इनके मकानपर पहुँचा। वे खाना खा चुके थे और मुँहमें पान भरकर बाहर बैठकमें लेटे हुए जुगाली कर रहे थे।

मैंने कहा—'नमस्कार बिलवासी जी!'

उन्होंने उत्तर दिया—'ऊँ ऊँ ऊँ।'

'कुशल समाचार कहिये।'

'ऊँ ऊँ ऊँ'

'इस समय आप क्या कर रहे हैं? आपसे एक राय करनी है।'

'ऊँ ऊँ ऊँ'

मैं झल्ला गया; मैंने कहा—'आपकी जानमें सिवा ऊँ के और भी कोई ऐसा शब्द है जिससे आप मेरा उत्तर दे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सकें ? आपको जानना चाहिये कि मैं पशुओंकी बोली नहीं समझता ।'

वे थोड़ी देर मेरी ओर इस प्रकार देखते रहे जैसे मुझे वे कोई बर्साती कीड़ा समझते हों जो व्यर्थ उनके कानोंके पास भनभन कर रहा था। फिर पान घोंटकर उन्होंने अपना मुँह खाली किया और बोले—'लालाजी ! आप किसी भले आदमीसे ऐसी आशा क्यों करते हैं कि जब वह भोजनके उपरान्त मुँहमें पान भरकर लेटा हुआ पेटपर हाथ फेर रहा है उस समय वह आपकी बातोंका उत्तर सिवाय ऊँ के अन्य किस प्रकारसे देगा ?'

'ख़ैर जाने दीजिये। मैंने समझा था कि आपकी जीभ ऐंठ गयी है। मैं इस वक्त इसलिए आया कि मुझे आपसे एक ज़रूरी काम है।'

'कामके नामसे मैं घबराता हूँ। कोई राय देनी हो तो लेटे-लेटे दे सकता हूँ।'

'मैं चाहता हूँ कि आप मेरी भावी पत्नीको देखकर उसकी सूरत-शकलके बारेमें अपनी राय दें।'

'बुला लाइये उन्हें। वे आपकी बीबी होने वाली हैं—इस लिए उनके साथ सहानुभूति भी प्रकट करूँगा और साथ ही अपनी राय भी ज़ाहिर कर दूँगा। कहाँ हैं—क्या बाहर खड़ी हैं ?'

'आप भी पूरे अहमक़ हैं। वे बहराइचमें रहती हैं, वहीं जाकर आपको उन्हें किसी प्रकार देख आना है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पाँचवें दिन सुबह मुझे दो पत्र मिले, एक बिलवासी जीका, दूसरा लड़कीके पिताका। बिलवासीजीका पत्र मैं ज्यों-का-त्यों उतारे देता हूँ। उन्होंने लड़कीके सम्बन्धमें केवल इतना लिखा था जो मेरे ख़यालसे बहुत काफ़ी था—

तावा सी तमाल सी तमाखू सी तिलकुट सी
पावस अमावसकी रैन अन्धकार सी।
कागा सी करइत सी काजल सी कालिका सी
कोइल सी कोयलासी ख़ासी कोलतार सी॥
बिलवासी

लड़कीके पिताका पत्र पढ़कर मैं दंग रह गया। उसमें लिखा था—'आज एक ब्राह्मण देवता कहींसे घूमते-फिरते मेरे यहाँ आ गये थे। वे सामुद्रिक शास्त्रके अद्वितीय विद्वान जान पड़ते थे। उन्होंने अपना नाम बिलवासी मिश्र बताया था। उन्होंने हम सबका हाथ देखा। मेरी लड़कीका हाथ देखकर उन्होंने बतलाया कि इसकी शादी जिसके साथ तय हो रही है वह महा लम्पट और दुराचारी है और छः महीनेके अन्दर उसकी मृत्यु अवश्य हो जायगी, या तो चुल्लूभर पानीमें या कालेपानीमें। ईश्वरको अनेक धन्यवाद है कि आपके बारेमें ये बातें पहले मालूम हो गयीं। मैं अपनी लड़कीको आगमें नहीं झोंक सकता। आपके साथ उसके विवाहकी जो बातचीत चल रही थी उसे अब भूल जाइये।'

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३

क्लबकी वार्त्ता

आज संध्यामें मैं कई सप्ताहके बाद अपने क्लब आ सका। बहुत दिनोंके बाद मित्रोंसे मिलनेकी खुशी तो थी ही, साथ ही उन्हें एक खुशख़बरी भी सुनानी थी।

बहराइच वाले 'विवाह-विस्फोट' के बाद मेरी शादी एक अच्छी जगह तय हो गयी। बहुत कुछ उतराचढ़ी और मोल-भावके बाद मैंने ज़बान दे दी। लड़की भी पढ़ी लिखी और खूब-सूरत थी। यही समाचार मुझे आज अपने क्लबके मित्रोंसे कहना था।

एक बात उल्लेखनीय है। एक जगह शादी तय हो जानेके बाद जिन अनेक लोगोंको निराश होकर लौटना पड़ा था वे अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मुझे बुरा कहने लगे—जिन्हें मेरे शरीरमें पहिले अरबी घोड़ेका बल देख पड़ता था उन्हींको अब उसमें सिर्फ़ गधेकी मुटाई देख पड़ने लगी। जिनके लिए मैं अभी कलतक खरा था, उन्हींके लिए आज मैं टलहा हो गया। भला बताइये कि मैंने कब कहा था कि मेरी सिर्फ़ एक ही शादी हो। मैं परमात्मासे सदा प्रार्थना करूँगा कि मेरी मुक्ति उस समय तक स्थगित रक्खी जाय जब तक कि मैं किसी कुलीन ब्राह्मणके यहाँ जन्म न ले लूँ।

आज संयोगसे क्लबमें अधिकांश सदस्य उपस्थित थे। नमस्कार प्रणामके बाद मैं एक साँसमें सारी खुशखबरी सुना ले गया और बधाईके बौछारकी प्रतीक्षा करने लगा। पर जो बौछार मिला वह बधाईका नहीं था, और चाहे जिसका रहा हो।

लाला झाऊलालने कहा—'आपके लिए शादी करना दुस्साहस मात्र है।'

चौधरी बतासरायने कहा—'आपकी खोपड़ी खुजला रही थी क्या?'

पं० जीट बहादुर शर्म्माने कहा—'तलवे में तेल मालिश करना न आता हो तो अब सीख लीजिये।'

मुं० छेदी लालने कहा—'एक आप बचे थे, सो आप भी हम लोगोंकी तरह नकटे बने।'

पं० मजीरानन्दने कहा—'आप फ़ौरन मृत्युञ्जयका जप शुरू करा दीजिये।'

24179

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पं० निपट नारायणने कहा—'आपके साथ शादी उस बेचारी-के किस महापातकका फल हो सकता है ?'

मैं इस बौछारको चुपचाप सहता रहा—जैसे पृथ्वी कलि-युगका भार सह रही है। कुछ देर बाद पं० बिलवासी मिश्रने पूछा—'लालाजी ! आपकी बीवी है कैसी ?'

मैंने कहा—'हसीन है।'

'और आप ऐसे ! यह आपको मानना पड़ेगा कि आपकी आँखें बिल्कुल चित्ती कौड़ी सी हैं।'

मैं चुप रहा।

'यह भी आपको मानना पड़ेगा कि आपकी नाक हूबहू गाँजेकी चिलम सी है।'

मैं चुप ही रहा।

'आपके कानोंके आगे सूप भी मात हैं।'

मैं फिर भी चुप रहा।

'आपका रंग ऐसा है कि आपके पसीनेसे स्याही बन सकती है।'

चुप रहनेकी भी एक सीमा होती है। मैं उबलना चाहता था पर अपनेको सम्हालकर धीरेसे बोला—'आख़िर आप मेरा हुलिया इस प्रकार क्यों दुहरा रहे हैं ? इससे आपने अपना और मेरा क्या लाभ सोचा है ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'कुछ नहीं, केवल आपके हाल पर अफ़सोस कर रहा था। अच्छा आप कमसे कम एक काम अवश्य कर डालिये।'

'कहिये।'

'आपकी शादी कब होने वाली है?'

'अभी दो महीने हैं, लगन खुलनेपर होगी।'

'बहुत काफ़ी समय है। इस बीचमें आप अपने शरीरपर की फ़जूल चर्बी गला डालिये। अभी आप माटीके मोटेमलसे मालूम पड़ते हैं, चर्बी गल जानेपर आप क़रीब-क़रीब एक आदमीसे मालूम पड़ने लगेंगे। थोड़ा व्यायाम कर डालिये।'

व्यायामका नाम सुनकर मैं डर गया। तब भी चार आदमीके बीचमें मुँहका पानी रखनेकी ग़रज़से बोला—'ख़ैर इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है गो व्यायाम करना मेरे लिए लोहेका चना चबाना है: पर मुझे सिखलायेगा कौन?'

'इसकी चिन्ता न करिये। कल सुबह मेरे साथ आप प्रो० बलवन्तसिंहके अखाड़ेमें चलिये।'

'तय रहा, चलूँगा। मेरा सुबह नौ बजे होता है, ठीक दस बजे मैं आपकी माँदमें हाजिर हो जाऊँगा।'

मैंने चलते-चलाते कहा—'आप लोगोंको मैं आगाह किये देता हूँ कि मेरी बारातमें आप सब लोगोंको चलना है।'

मुझे ऐसा जान पड़ा कि बारातमें चलनेका नाम सुनकर कुछ लोग बग़लें झाँकने लगे। इसलिये मैंने किंचित रोषके साथ कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि जो मेरी बारातके साथ न जायगा मैं उसकी अरथीके साथ न जाऊँगा।'

इस धमकीका नतीजा यह हुआ कि आगा-पीछा करने वाले तुरन्त रास्तेपर आ गये।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

४

घास-ताड़ संवाद

शहरके कुछ बाहर प्रो० बलवन्तसिंहका मशहूर अखाड़ा है जहाँ सुबह-शाम बहुतसे नवयुवक व्यायाम सीखने और करने आते हैं। व्यायाम विषयक ऐसी कोई बात नहीं है जो बलवन्तसिंह न जानते हों। पटा-बनेठी गदका-फरी दाँव-पेंच डंड-बैठक ड्रिल-डम्बेल जिमनास्टिक-जूजुत्सू—याने कबड्डीसे लेकर हठयोग तक—सभी कुछ जानते हैं। इनकी विशेषता यह है कि ये अन्य पहलवानोंकी तरह जाहिल नहीं है। ये स्वयम् पढ़े-लिखे हैं और इनके शागिर्द भी प्रायः पढ़े-लिखे लोग हैं।

इनकी शहतीर सी बाँहें और चट्टान सी छाती देखते ही बनती हैं। साक्षात देव सा इनका शरीर है। जिस समय पं०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बिलवासी मिश्रने मुझे लाकर इनके सामने खड़ा कर दिया और ये मेरी ओर देखने लगे उस समय मुझे ऐसा जान पड़ा कि जैसे कोई ताड़का पेड़ किसी तृणको देख रहा है। बिलवासीजीने कहा—'लीजिये प्रोफ़ेसर साहब, आपके लिए एक रँगरूट लाया हूँ।'

'ये क्या चाहते हैं ?'

'अपने शरीरकी फालतू चर्बी गलाना चाहते हैं। दो महीनेमें इनका विवाह होनेवाला है, उसके पहिले सारी चर्बी गल जानी चाहिये।'

'लाइये इन्हें मेरे हाथपर रख दीजिये। ज़रा उलट-पुलट कर अच्छी तरह देखूँ।'

इतना कहकर प्रोफेसर साहबने मुझे अपनी ओर खींच लिया, और मेरे पेट और पीठ और छातीको ठोंक-पीटकर देखने लगे। मुझे ऐसा जान पड़ा कि सड़क पीटनेका रोलर मेरे बदनपर फेरा जा रहा है। देख सुनकर पं० बिलवासी मिश्रसे बोले—'पंडित जी! जितनी चर्बी इस शख्सके पेटपर है उतनी ह्वेल मछलीके सारे बदनमें नहीं होती। मांसपेशियाँ ढीली हैं, स्नायु कच्चे धागेके समान हैं; सारा शरीर निरा दलदल है, पिलपिला है।'

'तभी तो इन्हें आपके पास ले आया। कोशिश कीजिये—जबतक साँस तबतक आस वाली बात है। इनकी भावी पत्नी आपको दोआ देगी।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'अच्छा ख़ैर, रुक जाइये, मैं आज हीसे इन्हें ठीक करना शुरू करूँगा। अभी ख़ाली होकर आता हूँ।'

प्रोफ़ेसर बलवन्तसिंह जीकी बातोंने मेरे हृदयमें कुछ अजीब धुकधुकी सी पैदा कर दी। लड़कपनके दिनोंमें जब मैं अधिक शरारत कर बैठता था तब पिता जी कहते हुए उठते थे कि ठहरो, मैं अभी तुम्हें ठीक कर देता हूँ; और मेरी पीठ गवाह है कि अच्छी तरह ठीक करके छोड़ते थे। बलवन्तसिंह जीने भी यही बात कही थी कि मैं आज हीसे इन्हें ठीक करना शुरू करूँगा। यदि इनके 'ठीक करने' की विधि पिता जीके विधिसे मिलती-जुलती साबित हुई तब तो मैं बेमौत मरा।

पाँच मिनट बाद प्रोफ़ेसर साहबके सामने हम लोगोंकी पुकार हुई। वे एक चौकीपर अंटाचित्त लेटे हुए थे और दो पहलवान उनके शरीरको आटेकी तरह गूँध रहे थे। हम लोग सामने कुर्सियोंपर बैठ गये। उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा—'आपको व्यायाम शुरू करानेके पूर्व मुझे दो शब्द आपसे शारीरिक उन्नतिके बारेमें कहने हैं।'

मैंने कान फटफटाया और सुनना शुरू किया।

'सुनिये, आपको धोखेमें रखना उचित नहीं है। यह मैं आपको शुरूमें ही बतला देना चाहता हूँ कि पढ़े-लिखे भारतीयों के लिए व्यायामकी आवश्यकता संशयग्रस्त है। उन्होंने मान लिया है कि डँड़से दिमाग़ स्थूल हो जाता है और बैठकसे रान-की नसें मर जाती हैं। कुश्ती सभ्योचित नहीं है और कुश्ती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अगर सीखे भी तो जूजुत्सूके नामसे सीखे; मुगदर करना हो तो Indian Clubs के नामसे उन्हें विलायतसे मँगावे। यदि ताश-के पत्ते ज़ोरसे पटककर खेले जायँ या शतरंजके मोहरे भारी बनाये जायँ—मसलन सीसेके—तो कलाइयोंपर काफ़ी ज़ोर पड़ सकता है। शराब पीकर लड़खड़ानेसे पैर मज़बूत होते हैं। दाँत कमज़ोर हों तो गिड़गिड़ानेकी आदत डाले, गाल पोपले पड़ गये हों तो मुँहमें पान भरकर उन्हें फुला ले। ज़ोरसे हायहाय करनेसे फेंफड़ा मज़बूत होता है, छाती पीटनेसे छाती चौड़ी होती है। चेहरा पीला पड़ गया हो तो उसे आँसुओंसे धो डाले। पेटकी शिकायतोंके लिए रोज थोड़ी देर सड़कपर पेटके बल रेंगनेका अभ्यास करे। बिना डँड़-बैठक किये अगर जी न माने तो अधिकसे अधिक पाँच डँड़ और दस बैठक करे; पर इसके बाद सड़कपर निकले तो पहलवानी कुर्ता पहनकर और इतनी ऐंठ और धमकके साथ चले कि आसपासके मकान हिलते हुए जान पड़ें। किसीको अगर धक्का लग जाय और वह फौरन एक चाँटा जड़ दे तो अगले जन्ममें उसे चार चाँटा लगानेका वादा करके उस वक्त किसी तरह अपना पिण्ड छुड़ावै—पर हाँ तेरह और बीसके बीचकी कोई खूबसूरत औरत देख पड़े तो उसे आँखोंसे निगल जानेकी हरकतसे कभी न बाज़ आये; ऐसा करनेसे आँखोंकी ज्योति बढ़ती है।'

प्रोफ़ेसर साहब एक साँसमें इतनी बात कह ले गये थे—मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

केवल हुँकारी भरता गया था। वे फिर बोले—'अच्छा, मैं आपको कुछ ऐसी कसरतें सिखाऊँगा जिनसे आपके शरीरकी चर्बी उसी प्रकार पिघल जायगी, जैसे मेनकाके आगे विश्वामित्र पिघल गये थे। इसके अलावा मैं आपको कुछ कुश्ती भी लड़ाऊँगा क्योंकि स्वयम् सुश्रुतने कहा है कि न सौ डंड न एक लपटंट। लँगोटकी जरूरत पड़ेगी। है?'

'जी नहीं, लेकिन आज ही सिलवा लूँगा।'

'और मैं आपको एक मंत्र बताता हूँ जिसे मेरे सब शागिर्द सुबह-शाम व्यायाम आरम्भ करनेके पूर्व एक पैर पर खड़े होकर पढ़ते हैं। इसका पाठ सद्यः फलदायक है—शरीरमें स्फूर्त्तिका संचार करता है, हृदयमें बल देता है और चित्तमें भिड़नेकी भावना उत्पन्न करता है। लिखिये मैं बोलता हूँ:—

ॐ ह्रीं क्लीं

जगमंधारी भच् कागभुसुंडी धत्
अड्ड़ लड्ड़ घम् मूक समूचा घम्
चारो खाने चित कफ औ वायू पित
जू जू जू मर्दान हीं हीं हीं शैतान
टंटा ताबरतोड़ झार झपट्टा मोड़
खपड़ोई खड़कन्त औघट घाट भिड़न्त
घूम असीटा घिस फटे फेंफड़ा फिस

प्रोफेसर साहब फिर बोले—'कलसे आपको १०२५ बैठक लगानी होगी।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'एक हज़ार और पचीस बैठक ? सौ पूरा करते-करते तो मेरी टाँगें छटककर लंकामें जा गिरेंगी ! मुझे मरना होगा तो चारपाईपर लेटे-लेटे मरूँगा, बैठक करते-करते नहीं ।'

'घबराइये नहीं । आपको करना होगा १०२५ बैठक, पर आप गिनना शुरू करेंगे १००१ से, जैसे पत्र-पत्रिकाओंके प्रकाशक अपनी ग्राहक संख्या गिनना शुरू करते हैं । एक हज़ार पचीस पर खतम ।'

'हाँ, यह ठीक है ।'

'आप सुबह जलपान क्या करते हैं ?'

'पहिले कड़वा तेल और नमकके साथ बासी रोटी खाता था; जबसे चचा साहबकी गद्दीपर बैठा हूँ तबसे बादामका हलवा खाता हूँ ।'

'नहीं यह सब छोड़ दीजिये, सिर्फ़ भींगा चना खाया करिये ।'

'बहुत खूब !'

'और कैसे ?'

'जैसे आप कहें ।'

'तोबड़ेमें भरकर । देखिये घोड़े इसी प्रकार चना खाते हैं और कितने बलवान होते हैं !'

मैं फ़ौरन उठ खड़ा हुआ । बिलवासीका भी मैंने इन्तज़ार नहीं किया । मैंने सीधे घरका रास्ता पकड़ा ।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

५

बिल्लौरसी खोपड़ी

इन्तेज़ारके दिन द्रौपदीके चीरकी तरह लम्बे होते हैं। शादीके दो महीने भी दो बरसके समान किसी प्रकार कट गये। आज शामकी गाड़ीसे मेरी बारात लखनऊ जा रही है। अपने वादेके अनुसार क्लबके सभी सदस्य स्टेशनपर उपस्थित थे। बुजुर्गोंको मैंने एक डब्बेमें बैठाया और खुद अपनी सारी शैतान पार्टीके साथ दूसरे डब्बेमें बैठा।

लाला घासीरामने बैठते ही यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि आज कमसे कम दो घंटे अकारण हँसा जाय, और मुझे विश्वास है कि यह प्रस्ताव विना विरोधके पास हो जाता यदि ईश्वरने दया करके सकारण हँसनेकी सामग्री तुरन्त न उपस्थित कर दी होती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एक बड़े भड़कीले मुसलमान सज्जन गाड़ीमें आये और खिड़कीके पाससे एक बच्चेको हटाकर वहाँ स्वयम् बैठ गये। वे अपने कपड़े-लत्ते और साज-सामानसे समस्त मुसलमानी राष्ट्रोंके प्रतिनिधि जान पड़ते थे क्योंकि उनकी टाँगोंमें काबुली पायजामा बदनपर पर्शियन कोट, सरपर तुर्की टोपी, मुँहमें ईजिपशियन सिगरेट, हाथमें अबीसीनियन बेंतकी छड़ी और पैरोंमें मोरक्को लेदरके पम्प थे।

गार्डने ट्रेन 'स्टार्ट' करने की सीटी दी थी कि आपने एक पान वाले को बुलाया और चार पैसेके पान लिये। पान वालेने पैसे माँगे और आपने अपना जेब टटोलना शुरू किया। पैसे खनखना रहे थे पर आपको मिल न रहे थे। इतनेमें गाड़ी चल पड़ी और पानवाला ट्रेनके साथ-साथ चलने लगा—फिर गाड़ीके तेज़ होनेपर धीरे-धीरे दौड़ने लगा। आपने अभी तक पैसे न दिये थे और न देनेका इरादा इनका जान पड़ता था। पान वाला भी पक्का धूर्त था, इनकी मंशा समझ गया। ट्रेन प्लेटफार्मके बाहर हो ही रही थी कि उसने लपककर इनकी तुर्की टोपी उतार ली और खड़ा हो रहा। गाड़ी प्लेटफार्मसे निकल गयी।

इस वक्त मियाँ साहबका मुँह देखते ही बनता था। टोपी पानवालेके हाथमें और आप गाड़ीमें! हम लोगोंको पानवालेकी यह कार्रवाई निहायत पसन्द आयी, यहाँतक कि लाला झाऊलाल 'हिपहिप हुर्रे' चिल्ला उठे। मियाँ साहब के क्रोधका कोई वारा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पार न था—मुँहसे फेन छोड़ रहे थे। पर करते क्या; नीयतका फल हाथोंहाथ मिल गया था—चार पैसेके पानके लिए चार रुपयेकी टोपी गँवायी।

इस घटनाको सोचकर हँसी आने लगी। मियाँ साहबकी झेंप देखकर पेटमें बल पड़ने लगे। पं० बिलवासी मिश्रने उनके पास जाकर कहा—'अब छोड़िये टोपीका अफ़सोस—पान खा डालियें।' इन बातोंसे क़हक़हेका बाज़ार और भी गर्म हुआ, हम लोग हँसीके धारा-प्रवाहमें बह चले।

उसी डब्बेमें खिड़कीके पास एक सज्जन अपनी रूपवती स्त्रीके साथ बैठे हुए थे। स्त्रीके चेहरे पर घूँघट था पर यह जानी हुई बात है कि घूँघट सौन्दर्य्यका कभी भी यथेष्ट रूपसे दुराव नहीं कर सकता। गाड़ीके छोटे गार्ड साहब बड़े 'दिल-फेंक' जान पड़ते थे—आप हर स्टेशनपर किसी-न-किसी बहाने उसी खिड़कीके पास मँडराया करते थे। धीरे-धीरे उनकी हिम्मत यहाँ तक बढ़ गयी कि अब उन्होंने खिड़कीके अत्यन्त निकट आकर टहलना शुरू किया। स्त्रीका पति दो-तीन स्टेशनों तक उनकी यह हरकत देखता गया। गाड़ी फिर खड़ी हुई और गार्ड साहब यथा-पूर्व खिड़कीके सामने कावा काटने लगे। इस बार स्त्रीके पतिने उन्हें बड़े आदरपूर्वक भीतर बुलाकर सामने बेंचपर बिठाया। इसके बाद उन्होंने धीरेसे स्त्रीका घूँघट उठाया और गार्ड साहबसे बोले—'देखिये, यह मेरी स्त्री है। दिल भरकर देख लीजिये, जिसमें बार-बार आपको खिड़कीके सामने गश्त लगानेका कष्ट न उठाना पड़े।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गार्ड साहब खूब बदरंग पड़े। गुण्डे बदनाम हैं कि औरतोंको देखकर वे आवाज़कशी करते हैं पर कितने शरीफ़ कहलानेवाले सफ़ेदपोश इन बातोंमें गुण्डोंके भी कान काटते हैं।

अगले किसी स्टेशनपर एक टी. टी. सी. गाड़ीमें चढ़ा और यात्रियोंके टिकट जाँचने लगा। कोनेमें एक सीधे-सादे आदमी अपने दस ग्यारह वर्षके लड़केके साथ बैठे थे। उन्होंने डेढ़ टिकट निकालकर दिखाया। टी. टी. सी. महोदय मचल गये। बोले कि लड़का बारह वर्षसे ज्यादः उम्रका है, मैं इसका पूरा 'चार्ज' करूँगा। लड़केके पिताने बहुत कुछ कहा कि लड़का अभी ग्यारह वर्षका है पर उन्होंने एक न सुना, पूरा चार्ज करनेके लिए अड़ गये। आखिर लड़केके पिताने कहा—'आप नहीं मानते तो मैं इस लड़केके पूरे टिकटका दाम दे देता हूँ, पर कृपा करके आप मेरे एक प्रश्नका उत्तर दे दीजिये।'

उन्होंने कहा—'पूछिये।'

'मैं जानना चाहता हूँ कि इस लड़केके बाप आप हैं या मैं हूँ।'

'नहीं, आप हैं।'

'तो इसकी अवस्थाके सम्बन्धमें जितना मैं जानूँगा उतना आप नहीं जान सकते।'

इस बातपर सबको हँसी आ गयी और टी. टी. सी. भी हँसकर चल दिया।

सुबह तड़के गाड़ीसे उतरना था। बहुत समय तो हँसते-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बोलते कट गया पर रात दस बजे हम लोगोंको सोनेकी सूझी। थे हम लोग कई पर जगह थी कम। क्या किया जाय? जगह कम न होती पर रास्तेमें चार पाँच मुस्टण्डे साधू गाड़ीमें चढ़ आये थे और बहुतसी जगह छेंककर बैठ गये थे। इनके घुटे हुए सिर बिजलीकी रोशनीमें स्फटिक शिलाकी तरह चमक रहे थे। इनकी सूरतसे जान पड़ता था कि ये बिलकुल रँगे-सियार हैं। सुरती-चूनाकी फंकी लगाकर सारा डब्बा ये थूक-थूककर भ्रष्ट कर रहे थे। बातें भी इनकी सांसारिकतासे चुपड़ी हुई थीं। इनके मुखियाने खुद सकारा कि किसी जायदाद सम्बन्धी मुकद्-मेकी पैरवीमें ये लखनऊ जा रहे थे। इनकी बातें सुनकर और इनकी सूरत देखकर सहजही हृदयमें घृणाका उद्रेक होता था। काशी प्रयाग आदि स्थानोंमें मैं ऐसे साधुवेशधारी साँड़ोंको अक्सर देखता हूँ। ये सर्वसाधारणके सामने ब्रह्मज्ञान कूटते हैं, कुटियोंमें रहनेका ढकोसला करते हैं और कुटनियोंसे सत्सङ्ग करते हैं। इनके बारेमें—

साधू मठमें बैठि लिये सन्यास सरासर।
घरमें तिरिया नहीं पतुरिया तेरह बाहर॥

अगर ये सब गाड़ी छोड़ कर चले जाते तो हम लोगोंको सोनेके लिये काफ़ी जगह निकल आती; पर जानेको कौन कहे ये और भी पैर फैलाकर बैठने लगे। सबकी राय हुई कि बिना टंटा खड़ा किये अगर ये खदेड़े जा सकें तो बड़ा अच्छा हो; पर ऐसा करने का कोई कटकीना सूझता नहीं था!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मैं पहिले ही इशारा कर चुका हूँ कि पं० बिलवासी मिश्र इस क्लबके मस्तिष्क हैं। उन्होंने थोड़ी देर सोच कर कहा—'यदि क्लब मेरा सालभरका चन्दा माफ़ कर दे तो मैं इन्हें निकाल बाहर करनेकी तदबीर करूँ।' हम लोगोंने रातभर की तकलीफ़का ख़याल करके इस शर्तको मान लिया।

पं० बिलवासी मिश्र अपनी जगहसे उठे और इन मुस्टण्डे साधुओंके पास जाकर उनके मुखियाके पैर पकड़ कर नीचे ही बैठ गये। उसने समझा फिर कोई साधु-प्रेमी जीव है, कुछ दान दक्षिणा दे निकलेगा। बोला—'नीचे क्यों बैठे हो बच्चा, आवो बॅंच पर बैठ जावो।'

''नहीं महाराज! आप लोगों के बराबर कैसे बैठ सकता हूँ।'

'कहो, साधुओंसे क्या चाहते हो?'

'कुछ नहीं, आप लोगोंके दर्शनसे चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। महाराज, आपका नाम क्या है?'

'बच्चा! मैं गोसाईं हूँ। मेरा नाम कागागिरि है।'

'अरे सच! आप ही कागागिरि हैं? धन्य मेरे भाग्य! बड़ी लालसा थी आपके दर्शनकी। बड़ा नाम आपका सुना करता था। मैं जानता हूँ आपके बापका नाम पोंगागिरि था।'

'नहीं बच्चा! मेरे बापका यह नाम नहीं था।'

'अरे नहीं बाबाजी! आप भूल रहे हैं—आपके बापका नाम पोंगागिरि था। आपका स्थान घुरहूगंज है।'

'नहीं, बच्चा, मेरा स्थान डगमगपूर है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"आप फिर भूल रहे हैं। मैं जानता हूँ आपका स्थान घुरहू-गंजमें है। आप सण्डे को अण्डे और जुम्मा को दुम्मा खाते हैं।'

'यह सब क्या बक रहे हो बच्चा ?'

'आपके स्वर्गीय पिता स्वामी पोंगागिरिजी महाराज कोपीन पहनते थे और कोकीन खाते थे।'

'बच्चा ! साधुओंसे मसखरी करना महापाप है। कहो तुम चाहते क्या हो ?'

'मेरी एक प्रार्थना आपसे है।'

'कह भी डालो।'

'मेरी प्रार्थना यह है कि आप लोग बारीबारीसे मेरे सरपर एक-एक चपत लगाते जाइये।'

यह अच्छी प्रार्थना रही। बाबाजी बड़े विस्मित हुए। अभी तक बिलवासीजीको वे घनचक्कर समझते रहे, अब वे उन्हें पूरा पागल समझने लगे। ऐसी विचित्र प्रार्थना उन्होंने कभी नहीं सुनी थी। बिलवासीजी फिर बोले—'महाराज ! मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ—पैर पड़ता हूँ, मेरी प्रार्थना सुन लीजिये।'

साधुओंने एक दूसरेकी ओर देखना शुरू किया कि शायद कोई तो इस अश्रुतपूर्व प्रार्थनाका गुप्त अभिप्राय समझनेमें समर्थ हुआ हो, पर कहाँकी बात ! सभी आश्चर्य्यमें उभचुभ हो रहे थे। किसीके चेहरेपर अवगतिका प्रकाश न था। और तो और, हम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लोग भी जो बराबर पं० बिलवासी मिश्रके साथ उठते-बैठते हैं इस अनोखी प्रार्थनाका मर्म न समझ सके।

पं० बिलवासी मिश्रने बड़े विनयके साथ फिर कहा—'महाराज! आप लोग साधु हैं, मुझे निराश न कीजिये। मैं आजन्म आप लोगोंका ऋणी रहूँगा। दया करके आप सब लोग मेरे सरपर एक-एक चपत लगाते जाइये।'

यह कह कर उन्होंने अपनी टोपी उतार ली और बड़े बाबाजीके पैर पकड़कर गिड़गिड़ाने लगे। बाबाजीने पूछा—'बच्चा! कुछ कारण तो बताओ कि ऐसी प्रार्थना क्यों कर रहे हो?'

'महाराज! कारण न पूछिये। कारण जानकर आप लोगोंको दुःख होगा।'

'खैर तब भी बताओ तो सही।'

'कारण यह है कि जबसे आप लोगोंने इस डब्बेको अपने शुभागमनसे पवित्र किया है तभीसे मैं आप लोगोंकी घुटी हुई चाँदपर मोहित हो गया हूँ। मैंने ऐसी बिल्लौरसी खोपड़ियाँ कभी नहीं देखी थीं। इनपर चपत लगाने के लिए मेरी हथेलियाँ खुजला रही हैं, लपालप कर रही हैं। मैंने अपने चित्तको लाख समझाया पर मेरा चित्त अब काबूमें नहीं है। मैंने निश्चय कर लिया है कि आप लोगोंके सर पर मैं मनमाने चपत लगाऊँगा, चाहे उसका जो कुछ भी परिणाम हो। मैं जानता हूँ कि आप लोगोंकी खोपड़ियोंके साथ इस प्रकारकी वाही-तबाही करना पाप है। इसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लिए प्रायश्चितके रूपमें मैं पहिले ही से आप लोगोंके हाथोंसे चपत खा लेना चाहता हूँ जिसमें मैं जब मारना शुरू करूँ तो आप लोगोंको बुरा भी न लगे और मैं पापका भी भागी न बनूँ।'

अब जाकर प्रार्थनाका मर्म सबके समझमें आया। बाबाजी साहबानको सवा सोलह आने विश्वास हो गया कि पं० बिलवासी मिश्र अभी-अभी किसी पागलखानेसे भाग निकले हैं और अपने पागलपनमें जो कुछ न कर गुजरें सो थोड़ा है। दूसरे स्टेशनपर एक-एक करके सब उतर गये और दूसरे डब्बेमें जा बैठे।

पं० बिलवासी मिश्रकी जितनी तारीफ़ की जाय वह थोड़ी है। लाला घासीरामको नींदने बहुत परेशान कर रक्खा था—उन्होंने ऊँघते हुए अपना सर एक बार मुंशी छेदीलालकी नाक पर और दूसरी बार बग़लकी खिड़कीपर दे मारा था। वे उठ कर पं० बिलवासी मिश्रकी बलैयाँ लेने लगे। जगह अब काफ़ी हो गयी थी; खूब टाँग पसारकर हम लोग लेटे।

Library Sri Pertap Srinagar

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

६

मुजरा या लेक्चर

ज़रासी ग़लतीने सब किये-धरेपर पानी फेर दिया। इधर-उधरसे भरती करके सैकड़ों आदमी बारातमें बटोर लाया, पूरा पाँच-सौ रुपया आतशबाज़ीमें फूँक डाला पर समाज-सुधारकोंके फेरमें पड़कर कोई नाच-मुजरेका प्रबन्ध न कर पाया।

बरातियोंको इसकी बड़ी शिकायत थी; सब थू-थू कर रहे थे। मेरे श्वसुरजी रोनी सूरत बनाये मेरे पास आये और बोले—'बेटा, तुम मेरे मुँहमें कालिख लगा दोगे। मैं घरमें, मुहल्लेमें, बिरादरीमें क्या मुँह दिखाऊँगा? भले आदमीकी बारात और तवायफ़ नदारद। आख़िर महफ़िल कैसे जमेगी—लोग किसका मुँह देख कर बैठेंगे?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वास्तवमें यह एक जटिल समस्या थी। न जाने मेरी बुद्धि कैसी भ्रष्ट हो गयी थी कि मैंने समाज-सुधारकोंके एक डेपूटेशन-के सामने नाच-मुजरेसे परहेज़ करनेका वचन दे दिया था। यह उस वक्त नहीं समझ पड़ा था कि बिना नाच-मुजरेके महफ़िल कैसे जमेगी। ग़ौर करते-करते एक बात सूझी। मैं बोला—'जी! मैं कोई तवायफ़ तो नहीं लाया हूँ पर मेरे साथ पं० बिलवासी मिश्र आये हैं।'

'अजी हटाओ! भले आदमियोंकी महफ़िलोंमें हिंजड़े नहीं नाचा करते।'

'राम राम! आप क्या ग़लती करते हैं! पं० बिलवासी मिश्र हिंजड़े नहीं हैं, वे कवि और लेखक हैं। और वे नाचेंगे भी नहीं, केवल लेक्चर देंगे।'

'लेक्चर देंगे? अब महफ़िलोंमें मुजरेकी जगहपर लेक्-चर हुआ करेगा? तुम लोग भी पूरे आरिया हो गये हो।'

श्वसुरजीको समझाना फ़जूल था पर मैंने अपने मनमें निश्चय कर लिया कि आज शामको महफ़िलमें पं० बिलवासी मिश्रका लेक्चर अवश्य होगा। क्लबके अन्य सदस्य भी इस बात-से सहर्ष सहमत हुए। स्वयम् बिलवासी मिश्रको इसकी सूचना नहीं दी गयी—वे पहिलेसे जान जाते तो छान-पगहा तुड़ाते। केवल इसका प्रबन्ध कर दिया गया कि शाम होते-होते उन्हें एक लोटा कसेरूकी भङ्ग और पावभर वालूशाही मिल जाय।

पं० बिलवासी मिश्रकी बातोंमें कुछ ऐसा वशीकरण रहता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कि सुननेवाले अनायास वशीभूत हो जाते हैं। किसी भी मजलिस-को वे अपनी मुट्ठीमें कर सकते हैं। वे बोलना शुरू करते हैं तो मंत्रमुग्धसे लोग उनकी बातें सुनते हैं और वाहवाहके पुल बाँध देते हैं।

× × ×

महफ़िल ठसाठस भरी हुई थी। ख़बर उड़ी थी कि श्वसुरजीके समझानेपर मैंने कई मशहूर तवायफ़ोंको बुलवा भेजा था। लोग बड़े चावसे उनके आनेकी बाट जोह रहे थे।

आगेकी क़तारमें लाला झाऊलालके साथ पं० बिलवासी मिश्र बैठे हुए थे। कसेरूकी भंगने पेटमें पहुँचकर दिमाग़पर धावा बोल दिया था—वे अच्छी तरह भंगके चंगपर चढ़ गये थे।

लाला झाऊलालने पूछा—'कहिये पंडितजी, क्या हाल है?'

'क्या कहूँ! आपके आगे बीन बजानेसे क्या लाभ!'

'ख़ैर तब भी कुछ कहिये तो।'

'इस समय मेरे हृदयमें कविताका विकास हो रहा है।'

'होनाही चाहिये, आप कवि-कुल-मारडंड ठहरे।'

'क्या कहा?'

'मैंने कहा कि आप कवि-कुल-मार्त्तण्ड ठहरे।'

'हाँ यह तो ठीकही है। अपना हाल तो इस समय कुछ ऐसा है कि—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आनँद बयारि मोहि औचक लोकाये देत
स्वर्गको सदेह उड़े जात जमे डेना ज्यों।
तबक समान भयो आसमान भासमान
प्रकृति सुन्दरीको नैनाभिराम ऐना ज्यों।
फूल्यो है नन्दनवन नाकके समीप कहूँ
कानहूँमें बोलि रहीं कोइल औ मैना ज्यों।
मोदमें मढ़्यो है मन ऐसो इन्द्रजाल देखि
राजमें तिहारे भंग रोगसोग हैं ना ज्यों॥

यही अवसर था। मैंने लाला झाऊलालकी ओर आँख मारा। वे सरक कर बिलवासीजीके और निकट आ बैठे और बोले—'पंडितजी! आप जानते हैं कि इस महफ़िलमें आज इतनी भीड़ क्यों है?'

'शायद दूल्हेको देखकर दुलहिनके भागपर शोक प्रकट करनेके लिए।'

'नहीं नहीं! आपका लेक्चर सुननेके लिए ये लोग एकत्र हुए हैं।'

'सच कहना?'

'मैं और झूठ बोलूँगा!'

'अच्छी बात है—मैं लेक्चर दूँगा। खड़ा हो जाऊँ?'

'ज़रूर खड़े हो जाइये।'

'देखिये खड़ा होता हूँ।'

'हाँ, देख रहा हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'यह देखिये खड़ा हो गया। लड़खड़ाऊँ तो सम्हालियेगा।'

उनको खड़े होते देख लोगोंने अनुमान किया कि शायद तवायफ़ोंके आनेमें देर होनेके कारण वे वरपक्षकी ओरसे क्षमा याचना करेंगे। यह केवल हमी लोग जानते थे कि दो मिनटके अन्दर वे सारी महफ़िलको अपनी बातोंके बगूलेमें उड़ा ले चलेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

७

सभ्यताका शिखर

पं० बिलवासी मिश्रने खड़े होकर एक बार अपने चारों ओर देखा; फिर गला साफ़ करते हुए बोले—'सज्जनों! मेरी वक्तृता सुननेकी इच्छा प्रकट करके आपने जिस गुणग्राहकता-का परिचय दिया है उसके लिए आपको बधाई और धन्यवाद। आशा है मेरी बात आपके कानोंमें कनखजूरेकी तरह प्रवेश करके हृदयके अन्तिम सरहद तक पहुँच जायगी।

'मेरे मस्तिष्ककी तुलना मित्रोंने अजायबघरसे और शत्रुओंने कूड़ेख़ानेसे दी है—कारण यही हो सकता है कि मैंने बटेरबाज़ीसे लेकर योगदर्शन ऐसे गहन विषयोंपर भी वक्तृतायें दी हैं। आज मैं अपने मित्रकी बारातमें यहाँ आया हूँ, इसलिए विवाहका विषय अप्रासङ्गिक न होगा। आज मैं विवाहके सम्बन्धमें अपने विचार प्रकट करूँगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'आपमेंसे अधिकांश सज्जन विवाहरूपी ओखलीमें अपना सिर डाल चुके होंगे पर यदि आपसे पूछा जाय कि आपने ऐसा क्यों किया तो शायद ही आप इसका कोई संतोषजनक उत्तर दे सकेंगे। मैंने अपने मित्रसे एक बार पूछा कि आखिर आपने अपनी शादी क्यों की। उन्होंने उत्तर दिया कि और करता क्या, रातमें अकेले डर लगता था। शायद आप भी पूछनेपर इसी प्रकारका कोई उत्तर देंगे।

'मेरा ख़याल है कि जबसे विकासवादका जन्म हुआ है और डारविन महाराजने यूरपवालोंके आगे सिद्ध कर दिया है कि आप सबके गोत्रका मूल पुरुष कोई लंगूर था, तभीसे वहाँ की उन्नतिशील जातियाँ सभ्यताके कँगूरेपर बैठकर नये-नये विचारोंकी किलकारियाँ मारने लगी हैं। उन्हीं नये विचारोंमें एक यह भी है कि विवाह कोई धार्मिक संस्कार नहीं है, प्रत्युत एक सामाजिक सुप्रबन्ध मात्र है। उनका कहना है कि नैतिक तथ्य चाहे जो कुछ भी हो पर वस्तुस्थिति यही है कि स्त्री शुरूही-से एक उपभोग्य पदार्थ समझी गयी है, और किसी भी उपभोग्य पदार्थपर अधिकार प्राप्त करनेका प्रश्न सदा बलके आधारपर हल होता आया है। मानव सभ्यताके शैशवकालमें बलवान मनुष्य अपने निर्बल पड़ोसीकी धरती और मवेशीके साथ-साथ उसकी स्त्री भी अपहरण कर लेता था। बहुत दिनोंतक यह नोचखसोट जारी रही पर धीरे-धीरे जब मनुष्य निष्ठुर प्रकृतिके आघातोंसे बचना सीखकर और हिंस्र जन्तुओंपर विजय प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर अपेक्षाकृत शान्तजीवन व्यतीत करने लगा तब उसे एक ऐसी गृहिणीकी आवश्यकता प्रतीत हुई जो निश्चितरूपसे उसीकी हो कर रह सके। यही आवश्यकता वैवाहिक सम्बन्धके आविष्कारकी जननी हुई। इसे अधिक अनुकरणीय और ग्राह्य बनाने के लिए धर्मकी सहायता सापेक्ष थी, इसलिए इसे एक धार्मिक संस्कारका रूप दे दिया गया और मुल्लाओं, पादरियों और पुरोहितोंसे इसकी रजिस्ट्री करायी जाने लगी।

'पाश्चात्य जगतमें विवाहके सम्बन्धमें आज कल यही भाव ज़ोर पकड़ रहे हैं। दिन प्रतिदिन वहाँपर इस विचारका लोप होता जा रहा है कि विवाह उन पुनीत संस्कारोंमेंसे है जो मनुष्य के आध्यात्मिक जीवनसे भी घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं। विवाहको केवल एक सामाजिक नियंत्रण मान लेनेसे अमेरिका और यूरपमें जो अनाचार फैले हुए हैं वे किसीसे छिपे नहीं हैं। यदि विवाहसे धर्मका सम्बन्ध टूट जाय तो स्त्रीकी पवित्रताका कोई अर्थ नहीं रह जाता। कुमारीका अक्षतयोनित्व केवल वहीं तक वाञ्छनीय रह जाता है जहाँतक कि किसी भी नवीन वस्तुका प्राथमिक व्यवहार; उसकी स्वाभाविक लज्जा केवल वहीं तक चित्ताकर्षक रह जाती है जहाँ तक कि पुरुषकी कामवासनाको प्रदीप्त करनेके अन्य उपकरण।

'अब देखना है कि इसका प्रत्यक्ष फल इन देशोंमें क्या हो रहा है। यूरोपियन जन-समाजमें स्त्रियाँ गृहिणी भले ही बन जाती हों पर सहधर्मिणी कम ही होती हैं। अविवाहित अवस्थामें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपने 'धर्म' की रक्षा चाहे सिद्धान्ततः उनके लिए अच्छी चीज़ समझी जाती हो पर व्यावहारिक जीवनमें उसका अब कोई महत्व नहीं रह गया है। एक यूरोपियन या अमरीकन जब किसी तीस वर्षकी 'मिस' से शादी करता है तब अपने हृदयके अन्तरतममें यह भलीभाँति समझता रहता है कि वह किसी कुमारीसे शादी नहीं कर रहा है। कोई ड्यूक या अर्ल जब किसी मशहूर एक्ट्रेसका पाणिग्रहण कर ले जाता है तो यह अच्छी तरह जानते हुए कि उसकी स्त्री काफ़ी दुनियाँ देख चुकी है—काफ़ी खेल-खा चुकी है।

'इन बातोंका प्रभाव इन देशोंकी स्त्रियोंपर भी कम नहीं पड़ा है—खास करके पढ़ी-लिखी स्त्रियोंपर। जब उनके सब शौक़ पूरे हो जाते हैं, काफ़ी रँगरेलियाँ हो चुकती हैं और इच्छाएँ शिथिल पड़ने लगती हैं तब उनकी जीवन-नौकाको एक लंगरकी ज़रूरत होती है जिसके सहारे वे शान्तिके साथ गार्हस्थ्य जीवनमें रहकर यौवनमदकी खुमारी दूर कर सकें! इसी लिये तब एक पतिकी खोज होती है—समाचारपत्रोंमें विज्ञापन प्रकाशित होने लगते हैं कि एक लेडीको ऐसे पतिकी ज़रूरत है जिसकी लम्बाई, चौड़ाई, मुटाई, वज़न और मासिक आय इतनी हो। एक अमरीकन डाक्टरका कहना है कि गर्भ रोकनेकी जितनी नयी क्रियायें ईजाद हुई हैं उनका ज्ञान विवाहित स्त्रियों-की अपेक्षा अविवाहित स्त्रियोंको ही अधिक है। पति देवताक क्या इज्ज़त है यह आपको एक छोटेसे क़िस्सेसे प्रकट हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जायगा। एक फ्रेंच स्त्रीसे किसीने पूछा कि तुमको अपने दूसरे पतिसे कैसे परिचय हुआ। उसने उत्तर दिया कि इन्हींके मोटर-से मेरे पहिले पति दबकर मर गये थे। पातिव्रत धर्मका इन देशोंमें कितना आदर है इसका कुछ पता इस बातसे चलता है कि अँग्रेज़ी ऐसी उन्नत भाषामें पातिव्रत धर्मके लिए कोई भी शब्द नहीं है।

'एक अमरीकन उपन्यास लेखिकाने साफ़ शब्दोंमें लिखा है कि स्त्रियोंको एक साथ एक ही पतिकी अनुमति देना और फिर उनके आगे सतीत्वका आदर्श रखना पुरुषोंके स्वार्थका एक ज्वलन्त उदाहरण है; पुरुष बलवान हैं, अपने बलसे वे शासक और व्यवस्थापक बन बैठे हैं; और अपने मनके क़ायदे क़ानून बना कर स्त्रियोंको अपने स्वार्थकी अनुवर्त्तिनी बना रक्खा है। इसाइयोंके विवाह कराते समय पादरी जो 'मंत्र' पढ़ता है उसमें स्त्रियोंको To love and to obey शब्दोंपर हामी भरना पड़ता है। आजकल बहुत सी स्त्रियाँ To obey पर आपत्ति करने लगी हैं।

'ऐसी अवस्थामें विवाहके प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक है। फलतः यूरोपियन देशोंमें अनेक स्त्री और पुरुष आजीवन अविवाहित रह जानेका सङ्कल्प कर लेते हैं। कुछ बेचारे ऐसे भी होते हैं जो किसी 'अरदब' में पड़कर विवाह तो कर लेते हैं पर तत्पश्चात् सदा इसी फ़िराकमें रहते हैं कि कौन सा मौक़ा मिले और विवाह-व्यूहको भेद कर बाहर निकल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जायँ। जल्दीसे जल्दी डाइवोर्स कोर्टकी शरण ली जाती है। डाइवोर्स कोर्ट्समें भी कैसे-कैसे गुल खिलते हैं! जीवनकी एक-से-एक गोपनीय बातोंका पर्दा फटने लगता है। स्त्री कहती है कि मैंने अपने पतिको पड़ोसिनकी कमर पकड़े देखा; पति कहता है कि मैंने अपनी स्त्रीको साईसकी गोदमें बैठे देखा। जब जिरह शुरू होती है कि पति पड़ोसिनकी कमर पकड़ कर क्या कर रहा था और स्त्री साईसकी गोदमें बैठकर क्या कर रही थी—तब मामला और भी रंग लाता है। एकसे एक चटपटी बातें खुलने लगती हैं और पत्र-प्रकाशकोंकी बन आती है।

'डाइवोर्स कोर्ट्सकी रिपोर्ट्ससे आपका मनोरंजन न होगा पर उनसे सभ्य देशोंके दाम्पत्य जीवनपर बहुत कुछ प्रकाश पड़ेगा। अकसर इतनी छोटी-छोटी बातोंपर पति-पत्नीमें सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है कि हम गँवार देशोंके अधिवासियोंको सुनकर आश्चर्य होगा। मैं कुछ ऐसे ही 'केस' आपके सामने रखता हूँ।

१—दो-दो हफ्ते हो जाते हैं पति अपनी दाढ़ी नहीं बनवाता;—स्त्री डाइवोर्स कोर्टकी शरण लेती है।

२—पति खाली बैठा रहता है तब भी बच्चोंको नहीं बझाये रहता;—स्त्री डाइवोर्स कोर्टका रास्ता पकड़ती है।

३—पति आम तौरसे स्त्रीकी ओर पीठ फेर कर सोता है;—स्त्री ऐसे पतिका मुँह नहीं देखना चाहती जो मर्द होकर स्त्रीको पीठ दिखाता रहे।

४—स्त्रीको मुश्ककी खुशबू नापसन्द है पर पति बराबर यही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'सेंट' लगाता है;—स्त्री डाइवोर्स कोर्टका दरवाज़ा खटखटाती है।

५—शादीके बाद पता चलता है कि पतिके एक हाथमें छः उँगलियाँ हैं जिन्हें वह दस्तानेसे छिपाये रखता था। स्त्री डाइ-वोर्स कोर्टमें जाकर दम लेती है;—पति देवता अब छओ उँगली से अपना करम ठोंकते हैं।

शोफ़ेनहोवर नामक एक जर्मन तत्वज्ञ और मनीषी और दार्शनिक और विचारक हो गये हैं। उन्होंने टेट्रागामी (Tetragami) की प्रथाका निरूपण किया है, और प्रतिपादन भी। टेट्रागामीका अर्थ है—चारका विवाह, या चारके बीचका दाम्पत्य सम्बन्ध। यह कैसे होगा? संक्षेपमें, इस तरह—

१—बीस वर्षके दो नवयुवक एक बीस वर्षकी नवयुवतीसे एक साथ विवाह करें। वित्तकी कमी रहे तो रहे, उन दोनोंमें शारीरिक बल रहेगा—और इस तरह स्त्री प्रसन्न रहेगी। बीस वर्ष तक यह विवाह क़ायम रहे, जब तक वह स्त्री बिलकुल रूढ़ और खोखली न हो जाय।

२—तब तक वे ४० वर्षकी अवस्थाके हो जायँगे। इसके बाद ४० वर्षकी पहली और बूढ़ी स्त्रीको छोड़ दें—या पेंशन देकर बरतरफ़ करें। अब पचीस वर्षकी दूसरी स्त्रीसे दोनों आदमी विवाह करें जो सदाके लिए स्थायी रहे। इतनी औक़ात उनकी यक़ीनन हो गयी रहेगी जो एक स्त्रीको बैठाकर खिला सकें। बलकी थोड़ी कमी आयेगी, पर एक आदमी नहीं—दो आदमी हैं। स्त्री दोनोंके साथ संतुष्ट रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यह है टेट्रागामी, २ औरत और २ मर्द। सज्जनो! पश्चिम-की दुनिया ही निराली है; वहाँ वालोंको उनकी बुराइयाँ भी शोभा देती हैं—'शोभित कलंक जिमि अंकमें मयंकके'। इसमें सन्देह नहीं कि यूरप सभ्यताके इतने ऊँचे शिखरपर चढ़ गया है कि उसे 'झाँई' आने लगी है और अजब नहीं कि शीघ्र ही लुढ़क कर अब नीचे गिरे।

'आप लोग यह सोचकर बड़े प्रसन्न होते होंगे कि दुनिया-की सारी बुराइयाँ दूसरोंमें हैं और स्वयम् हम बड़े पाक-साफ हैं पर सच पूछिये तो हमारी बुराइयाँ उनकी बुराइयोंके आगे ऐसी हैं जैसे गरुड़ पक्षीके सामने गौरैया। जहाँ बालविवाह और वृद्ध विवाह ऐसी पैशाचिक प्रथायें प्रचलित हों वहाँके निवासियोंको दूसरोंकी ओर उँगली उठानेका कोई अधिकार नहीं है।

'अभी हालकी बात है कि मैं किसी जरूरी कामसे एक गाँवमें गया था। शामके वक्त पगडंडियोंपर टहल रहा था कि कुछ शोर सुनायी पड़ा और एक लड़का बड़ी तेजीसे भागता हुआ मेरी ओर आता दिखायी पड़ा। उसके पीछे-पीछे पचीस वर्षकी एक पहलवानसी औरत हाथमें लुआठी लिये दौड़ती आ रही थी। लड़का १२-१४ वर्षका रहा होगा। वह आकर मेरी टाँगोंसे चिपट गया। मैंने उसे शरणागत देखकर अभयदान तो दे दिया पर जब यह औरत निकट आयी तब मैं उसकी चण्डि-कासी सूरत देखकर सोचने लगा कि अब स्वयम् मैं किसकी शरण जाकर अभयदान माँगू। स्त्री मेरे पास आकर लुआठी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सम्हालती हुई खड़ी हो गयी। मैंने बड़ी नम्रतासे कहा—'देवी! जाने दो, मत मारो, अपराध इसका क्षमा करो। अभी निरा लड़का है।'

'वह कड़ककर बोली—'ई लड़िका नाहीं हौ, दयूकै साँड़ हौ। एकरे मारे हमार नकुरन परान होय गयल हौ। माता मैया के चढ़ावै बदे गुलगुला बनायके रखली, ई सँड़वा जायके जुठार देहलेस। एकरे पेटमें महामाई पइठैं! एक पानी भरपेट पीट लेबै तब जायके हम्मैं संतोख होई।'

'नहीं नहीं! ऐसा न करो, माफ़ कर दो, अब ऐसा काम कभी न करेगा। अपने बेटेपर इतना क्रोध न करना चाहिये।'

यह सुनते ही स्त्रीका चेहरा क्रोधसे लाल हो गया। आँखोंसे चिनगारी छोड़ती हुई बोली—'करे कैसन बेटा? तोके बवण्डर लूटै! हम्मैं गारी देबे!! ठहर जो अब्बै तोर सब सोखई भुलवाय देईला।' यह कहती हुई वह लुआठी तान कर मेरी ओर लपकी।

'मैं भागा—पत्तेछू भागा—सिरपर पैर रख कर भागा। दृश्य यह था कि आगे-आगे मैं और पीछे-पीछे वह, और उसकी लुआठी। मुझे दुःख इस बातका हुआ कि वही लड़का जिसके लिए मैंने अपनी जान जोखिममें डाली मेरी दौड़ देखकर ताली पीट रहा था और किलकारी मार रहा था। स्त्री मुझे गाँवके सरहद तक खदेड़ आयी। मैं गाँवके बाहर एक कूएँ-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर बैठकर दम लेने लगा। वहीं एक आदमीसे पूछनेपर ज्ञात हुआ कि लड़का उस स्त्रीका बेटा नहीं था वरन् उसका पति था।

'ऐसे अनमेल विवाह यहाँ एक नहीं अनेक होते हैं; तिसपर हमें ऋषियोंकी सन्तान होनेका दावा है। मैं हाँफ रहा था, नहीं तो देशकी दशापर उस समय दो आँसू गिराता।

'वृद्ध विवाहकी तो चर्चा ही न्यारी है। जब शरीर जुलजुल होकर झुर्रियोंसे ढँक गया, जब सूरत देखकर मौतके मुँहमें पानी भरने लगा, जब कफ़न लपेट कर सो रहनेका समय आया तब मौर बाँधकर सोलह वर्षकी एक नयी नवेली 'बुलबुल सी बोलवाली गाला सी गुलगुल' व्याह लायी गयी। उसे सिन्दूर क्या पहनाया गया उसकी माँगमें कोयला दर दिया गया। उस षोड़शीने भी साठ वर्षका पति पाकर उनका षोड़शोपचार आरम्भ कर दिया—उनके जीवनमें अपनेको विधवा मानती रही और उनके मरनेपर अपनेको सधवा समझने लगी। सुनिये :—

झाड़झाड़ खिलगाइ बने कंकाल सरीहन।
मानों चुनि-चुनि धरैं चिता पै सूखा ईंधन॥
दाँत पाँतके पाँत गये यमकी अगवानी।
गाल पोपले पड़े नाकतें चूवत पानी॥
ओलासे सित केस भयो ढीला सब चोला।
चालत तन कँह रोग पके फलको ज्यों ढोला॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कोस भयो गज एक—हाथमें कुबड़ी थामी।
ग्रीवा झुकि-झुकि परै मृत्युकी करै सलामी॥
सत्तरको करि पार बने हैं फिरसे दूल्हा।
बेवा घरमें छाँड़ि मसानै बारैं चूल्हा॥

× × × ×

महफ़िलके समाप्त होनेपर एक सज्जनने मुझसे पूछा—'क्यों महाशय! आपके मित्र पं० बिलवासी मिश्रकी क्या फ़ीस है? मैंने अपने लड़केकी शादीमें इन्हींको बुलानेका निश्चय किया है।'

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

८

गोरीका पति गोरिल्ला

अकेले ब्रह्मामें इतनी बुद्धि कहाँ ! त्रिदेवोंने मिल कर उसकी रचना की होगी। सौंदर्य्यकी एक नयी सीमा उसने क़ायम कर दी है। छटाँक भर वज़न, बुलबुलकी चहक, प्यारी आँखें और चाँद सा मुखड़ा ! मैंने उसे देखा और देखते ही आदमीसे लट्टू हो गया। जैसा मेरा घर बसा वैसा ईश्वर करे सबका बसे !

पाँच मिनटके अन्दर वह दो बार मेरी ओर देख कर हँसी और दोनों बार मैंने एक-एक चीज़ उसके हवाले कर दी—पहिली बार अपना हृदय और दूसरी बार अपने सेफ़बकसकी कुञ्जी। उसने भी प्रसन्न होकर मुझे तुरन्त अपने प्रधान अर्दलीके पदपर नियुक्त कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आज दिनमें तीन बार वह मुझे चौक भेज चुकी थी—सुबह हाथीदाँतकी कंघी लाने, दोपहरमें समीज सिलवाने और इस वक्त एक पेटेंट इत्र खरीदने। मैं मुँह लटकाये चौकसे लौटा, क्योंकि जो इत्र उसने माँगा था वह लाख तलाश करनेपर भी नहीं मिला।

उसने पूछा—'कहिये, ले आये।'

'अजी सारा चौक छान डाला, कहीं नहीं मिल रहा है।'

'इतने बड़े शहरमें ओटो-दिलबहार नहीं मिल रहा है!'

'ओटो-दिलबहार? राम राम!! मैं तो ओटो-सिरकपारका नाम पूछता फिरता था। अब इस तरहकी कोई चीज़ लानेको कहोगी तो परचेपर नाम लिख लिया करूँगा!'

'देखती हूँ कि आपकी स्मरणशक्ति लोप होती जा रही है।'

'नहीं यह बात तो नहीं है। कहो तो आँखें मूँदकर बता दूँ कि तुम्हारे बायें गालपर कितने तिल हैं।'

'मैं एक बात आपसे पूछ सकती हूँ?'

'एक नहीं सौ बातें पूछो लेकिन पहिले समीप बैठा लो।'

'आप अँग्रेजी कुछ जानते हैं?'

'हाँ हाँ, क्यों नहीं।'

'कहाँ तक?'

'अधिक नहीं जानता। केवल 'डैमफूल' तक मैंने अँग्रेजी पढ़ी है। मैंने निश्चय कर लिया है कि अपने बच्चोंको मैं डैमफूल पुकारूँगा गो मेरे पिता जी मुझे सूअर-गधा पुकारते थे।'

'हूँ! अच्छा हिन्दी तो आपने काफ़ी पढ़ी होगी?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'इसमें क्या शक। सिंहासन बतीसी, बैताल पचीसी क़िस्सा तोता मैना आदि मैंने सब पढ़े हैं। योगवाशिष्ठ और क़िस्सा-साढ़े-तीन-यार तो मैंने एकमें जिल्द बँधवा कर रख छोड़ा है। हिन्दी काव्यमें भी मेरी अच्छी घुसपैठ है; बिहारीके बिरहे, केशोके कँहरवे, कहाँ तक गिनाऊँ! साहित्यसेवा भी मैंने कम नहीं की है; सच पूछो तो साहित्यसेवा करते-करते मुझे दाढ़ी-मूँछ निकल आयी।'

'जब हिन्दी अँग्रेजीका यह हाल है तो संस्कृतके बारेमें तो पूछना ही व्यर्थ है।'

'नहीं ऐसा मत सोचो। संस्कृतमें भी मैंने मनुस्मृति आदि व्याकरणकी अनेक पुस्तकें पढ़ी हैं।'

'कुछ समझमें नहीं आता कि आपकी इन बातोंपर रोऊँ या हँसूँ!

'मुझे तुम दोनों दशामें सुन्दर लगती हो।'

'जब आप चार पढ़े-लिखे आदमियोंके बीचमें बैठते होंगे तो वे आपको क्या समझते होंगे?'

'वे मुझे बेवकूफ़ समझते हैं और मैं उन्हें बेवकूफ समझता हूँ।

'आख़िर इस अविद्याकी दशामें आपका कैसे काम चलेगा?'

'काम क्या चलना है? ईश्वर करे मेरे स्वर्गीय चचाजी कल्पवृक्षकी छाँहमें बैठकर कामधेनुका दूध पियें। वे मुझे आजीवन मसनद तोड़नेके लिये स्वतंत्र कर गये हैं।'

४

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मेरी बातोंपर उसे हँसी आ गयी। यदि शरद ऋतुकी चाँदनी रातमें आपने कुन्द कलीको खिलते देखा होगा तो उसकी मुसकानकी सुन्दरता और सरसताका कुछ अनुमान आप कर सकेंगे। हँसी क्या थी सुधाका स्रोत था। ओठोंके लाल पटलको हटाकर कुन्दनसे दाँत चमकने लगे।

मैं आँखों द्वारा इस रूप-मदिराको पीने लगा। अकसर ऐसा होता है कि जब मैं उसकी ओर देखने लगता हूँ तब राजा निमि मेरी पलकोंकी ड्योढ़ीदारीसे अवकाश ग्रहण करके भाग खड़े होते हैं। इस समय भी ऐसा ही हुआ! पीठपर लटकती हुई उसकी चोटी मेरे हृदयपर नागफाँसका काम कर रही थी। उसके अंग-अंगमें सौन्दर्य्यकी छटा थी।

सब बातोंमें वह मुझसे बढ़ कर है। जिसने अमा और पूर्णिमा एक साथ न देखी हो वह मुझे और उसे एक साथ देख ले। वह विदुषी है और मैं गँवार। वह सुन्दरी है और मैं? क्या कहूँ!! जो कुछ कसर थी उसे शीतला देवीने बचपन ही में चेहरेपर मसूरकी दालमोठ छिड़क कर पूरी कर दी। आश्चर्य है कि इतनेपर भी वह मुझे प्यार करती है—शायद उसी तरह जैसे कमलको कीचड़ प्यारा है।

अपने हृदयपर उसका आधिपत्य मैंने बिला किसी चीं-चपड़के स्वीकार कर लिया था। उसकी रीझ और खीझके अनुसार मैं कभी लोटन कबूतर और कभी भींगी बिल्ली बना रहता था। मेरे हृदयकी डोर अपने हाथमें करके पतंगकी तरह वह मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उड़ाया करती थी—कभी ढील देती थी और कभी खींच लेती थी।

खेद है कि मैं कवि नहीं हूँ—यदि कवि होता तो उसके रूपलावण्यकी प्रशंसामें कोड़ियों कवितायें लिख डालता, छपा डालता, और कोई न ख़रीदता तो मुफ्त बाँट डालता। तब भी पं० बिलवासी मिश्रकी मददसे मैंने कुछ लिखा है, सुनिये—

छलकि छवापै बजैं छागल छमाछम जब
सोनछरी सी वह डोलैरी मंद कदम।
काकुल सँवारे हेरि व्याकुल करत मैन
आनन निहारे चारु चन्द्रमाको होत भ्रम॥
गातकी गोराई पै सुवरनकी खान वारौं
अधर सुधारस पै वारौं कोटि चमचम।
रूप-मद छाके बाँके नैनन बलाके जाके
ऐसो तिरियाके—हाँ! पिताके हैं दमाद हम॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

६

सुधारोंका शिकार

आजकल मैं सुधारा जा रहा हूँ। मेरे दिल और दिमागको वह सुधारोंके झाँवाँसे रगड़-रगड़ कर साफ कर रही है। जिस प्रकार अड़ियल टट्टूकी पीठपर कोड़े बरसते हैं उसी प्रकार मेरे सिरपर सुधारोंके ओले बरस रहे हैं। यह उसे कौन समझाये कि बिगड़े दूधको मथनेसे मक्खन नहीं निकलता।

एक रोज उसने अचानक मुझसे कहा—'प्यारे! मैं आपको सुधारना चाहती हूँ।'

उस वक्त दोपहरके बारह बजे थे। मैं खाना खाकर लेटा हुआ पान कचर रहा था और एक झपकी लेनेकी तैयारी कर रहा था। इस बातने मेरे हृदयमें एक हलका-सा तहलका पैदा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर दिया। मेरे कान खड़े हो गये और मैं सहम कर उठ बैठा। मैंने पूछा—'क्या कहा, फिर तो कहना ?'

'मैं आपको सुधारना चाहती हूँ।'

'मुझे ?'

हाँ, आपको।'

'सुधारना चाहती हो ?'

'हाँ, सुधारना चाहती हूँ।'

'भला ऐसी कौन सी बुराइयाँ मेरेमें हैं ?'

'उनकी संख्या एकाई-दहाईमें न हो सकेगी, नहीं तो गिना देती। अभी देखिये आप अपनी पीठ जनेऊसे खुजला रहे हैं। जनेऊ इसी लिए है ?'

'नहीं जनेऊ तो कुँजी बाँधने और दँतखोदनी लटकानेके लिए है।'

'कितनी बार आपको सिखाया है कि जम्हाई आये तो मुँहके आगे हाथ कर लेना चाहिये पर ऐसा आप कभी नहीं करते।'

'यह बतलाओ कि परमात्माने लाखों गह्वर और गुफाएँ बनायी हैं पर किसको-किसको उन्होंने ढाँकनेकी कोशिश की है ?'

'हँसी न समझिये, मैं इस समय seriously बातें कर रही हूँ।'

'अच्छा लाओ, एक गिलास पानी दो, मेरा गला सूख रहा है।'

'आपने अच्छा याद दिलाया। कई बार सोचा था कि कहूँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर भूल जाती हूँ। आप पानी पीते हैं तो ऐसा जान पड़ता है कि पासमें कहीं पुरवट चल रहा है।'

'पुरवट ?'

'हाँ पुरवट ! पानी पीते समय आपके गलेसे घटर-घट-घट-घटका शब्द क्यों होता है ?'

'घट-घट-व्यापी जानें, मैं क्या जानूँ !'

'ख़ैर जाने दीजिये। लेकिन खाते वक्त आप कमसे कम एक बातका ख़याल तो ज़रूरही रखा करिये कि भातका शब्द गँवारू है। 'थोड़ा भात दो' न कह कर 'थोड़ा चावल दो' कहना चाहिये।'

'अच्छी बात है, अबसे भात को चावल पुकारूँगा। इसी प्रकार रोटीको आटा कहा करूँ तो कोई हर्ज तो नहीं है ?'

'मज़ाक़ न करिये। मुझे अभी दो शब्द आपकी शिखा या चुन्दीके सम्बन्धमें कहने हैं।'

'ज़रूर कहो। दो शब्द क्यों कहती हो, पूरी एक कविता कह डालो। कविता या लेखको मेरी चुंदीसे अच्छा विषय कौन मिलेगा !'

'आपकी चुंदी ज़रूरतसे ज्यादा मोटी है।'

'मेरे मित्र पं० बिलवासी मिश्रने इसकी तुलना भैंसिया जोंकसे दी है।'

'और लम्बी भी ज्यादा है।'

'मेरे मित्र लाला झाऊलाल इसे पगहा पुकारते हैं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'इसे छोटी करा दीजिये।'

'मैं तो इसे जड़से उड़ा देता पर क्या करूँ, अपने पिताजीकी यादगार है, इसीसे छोड़ देता हूँ।'

'आपकी शिखा पिताजीकी यादगार है?'

'हाँ, तुम जानती हो कि मेरे पिताजी बड़े ग़रीब थे। मरते समय वे मेरे बदन पर दो हाथकी लुँगी और सरपर एक हाथकी चुंदी—यही दो चीज छोड़ गये थे।'

'ख़ैर जाने दीजिये, मत छोटी कराइये। पर यह बताइये कि महादेवजीके दर्शनसे लौटते समय आप उसमें बेलपत्र क्यों बाँध लेते हैं?'

'साहित्यिक दृष्टिसे देखो तो समझ जाओगी। चुंदी कहाँ उगती है? खोपड़ीपर। खोपड़ी क्या है? एक प्रकारका बेल है। बेलसी खोपड़ीपर चुंदी—और चुंदीमें बेलपत्र! फलके साथ पत्तेका होना कैसा स्वाभाविक है!'

'आपने शिखा-सूत्र तो धारण किया है पर कभी संध्योपासना तो करते नहीं।'

'संध्योपासनाके लिये चौथेपनका इन्तेज़ार कर रहा हूँ।'

'अधिक नहीं तो सुबह ईश्वरका नाम ले लिया करिये और रातमें सोते वक़्त अपने गुनाहोंकी माफ़ी उससे माँग लिया करिये।'

'सोते वक़्त अपने गुनाहोंको याद करूँ कि रातभर अच्छी नींद भी न आये। तुम भी अच्छी शिक्षा देती हो!'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यह मेरे जीवनके एक दिनके सुधारोंका आभास मात्र है। मैं जिधर देखता था उधर ही सुधारके दैत्यको मुँह फैलाये खड़ा पाता था। मुझे गढ़-छीलकर आदमी बनाना ही उसके जीवनका एक मात्र उद्देश्य हो गया था। अनाड़ी, फूहड़ और अघोड़ी तो मैं कभी साबित हो चुका था। सोलहो आने पशु साबित होनेमें थोड़ी ही कसर रह गयी थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१०

नाकोंदम

पं० बिलवासी मिश्रके शब्दोंमें मेरी स्त्री कुकड़ू-पंथी है—अर्थात् प्रातःकाल बहुत तड़के वह मुर्गेकी बोली सुन कर चारपाई छोड़ देती है और अपने काम-धाममें लग जाती है। आज अनायास मेरी नींद कुछ जल्दी उचट गयी। मैंने नौकरको पुकारा—'अबे चमरुआ।'

चमरुआ जो उस समय दालान बुहार रहा था हाथमें झाड़ू लिये ही मेरे सामने उपस्थित हुआ—मानो दालानके बाद अब मुझे बुहारना चाहता हो। मैंने कहा—'ज़रा देख तो घड़ीमें क्या बजा है?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चमरुआने टकासा जवाब दिया कि साहब, हमैं घड़ी देखै नाहीं आवत।

अब मैं ज़रा फेरमें पड़ गया। घड़ी गो मेरे सिरहाने पीछे-की दीवारपर लगी हुई थी पर मैं सर घुमा कर देखनेका कष्ट नहीं उठाना चाहता था। सुबहका समय मेरे लिए बड़े आलस्य-का होता है। नींद अगर जल्दी खुल भी जाती है तो मैं चुपचाप लेटा रहता हूँ—हिलता-डोलता नहीं। पर घड़ी देखना इस समय ज़रूरी था क्योंकि विना समय जाने मैं यह नहीं निर्णय कर सकता था कि अभी और कितनी देर लेटा रह सकता हूँ। मैंने एक तदबीर सोची।

'चमरुआ!'

'जी सर्कार!'

'तुझे घड़ी देखने नहीं आता?'

'नाहीं सर्कार! हम घड़ी देखै का जानी। पै घड़िया तो पिछवें लटकत हौ, आप देख लेईं।'

'अबे तू बड़ा बेवक़ूफ़ है। घड़ी देखनेके लिए मैं तकिये परसे सर उठाऊँगा?'

'तब जौन हुकुम होय?'

'अच्छा, ताक परसे आईना उठा ला।'

चमरुआ आईना ले आया। मैंने कहा—'अब इस आईनेको मेरे मुँहके सामने दो सेकेण्डके लिए खड़ा कर दे।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसने ऐसा ही किया। मैंने आईनेमें घड़ीका प्रतिविम्ब देखा, पोने सात बज रहा था।

मैं पहिले कह चुका हूँ कि आमतौरसे मैं देरसे सोकर उठता हूँ, और अभी सिर्फ़ सवेरा था; इस लिए कमसे कम आधे घंटे भर तो मैं अभी और लेटा रह सकता था।

मैं लेटा-लेटा फिर सो गया होता पर इसी बीचमें किसीकी आहट जान पड़ी। मैंने आँख उघार कर देखा तो सरहाने बीबीको खड़ी पाया। वह नहा-धोकर लैस थी। उसके सुन्दर स्वच्छ कपोल 'बाल-रवि-रागे प्राची नभके कलित टूक' की भाँति चमक रहे थे। मैंने बड़े दुलारसे पुकारा—'प्राणेश्वरी।'

उसने कहा—'आप मुझे प्राणेश्वरी न पुकारा करिये, आप इस शब्दका ठीक उच्चारण नहीं कर सकते; जान पड़ता है कि पाँडेसुरी पुकार रहे हैं।'

'मेरे मित्र पं० बिलवासी मिश्र कह रहे थे कि 'चच्चा' उप-नामके एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। उनकी स्त्री भी तुम्हारी तरह परम सुन्दरी थी पर वे उसे प्यारी, प्राणेश्वरी, हृदयेश्वरी, प्रिये, प्रियतमे इत्यादि कुछ नहीं पुकारते थे। वे उसे 'चिरई' पुकारते थे।'

'छिः छिः !! निहायत नामाकूल शख्स रहे होंगे। बिल्कुल थर्ड क्लासका आदमी अपनी बीबीको इस तरह पुकारेगा।'

'हाँ, उनकी बीबीने भी उनसे यही कहा पर इसका उत्तर कवि 'चच्चा' ने इस प्रकार दिया —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पिक बोल अमोल मरालसी चाल
मनोहर रूप दईने दई।
सुक नासिका खंजन मंजुल नैन
सुकंठ कपोत छटा उनई॥
बिबि नीड़ज कंचुकि आइ बसे
सब अंग बिहंगनि लूटि लई।
पुनि कारन कौन प्रिया अनखाय
चचा कवि जो पै कहँ चिरई॥

इस अनमोल काव्यका उसके हृदयपर कुछ भी असर न हुआ। वह बोली—'इस कथाको जाने दीजिये। मैं इस समय आपसे सख्त नाराज़ हूँ।'

'अरे नहीं! ऐसा कहोगी तो मैं चारपाईके नीचे ढुक जाऊँगा।'

'अभी नौकरको बुलाकर आप उससे क्या बातें कर रहे थे?'

'कुछ तो नहीं। उसे घड़ी देखने नहीं आता था। इसलिए मैं उसे समझा रहा था कि बेटा! घड़ी देखना सीख लो, जीवन बीता जा रहा है, घड़ी देखना न जानोगे तो अपनी ज़िन्दगीकी घड़ी कैसे गिनोगे? यमराज पूछेंगे कि कै बजके कितने मिनटपर तुम्हारा देहान्त हुआ तो क्या उत्तर दोगे? इसी प्रकारकी कुछ ज्ञान-वैराग्यकी चर्चा उससे छिड़ गयी थी।'

'मज़ाक़ रहने दीजिये। कितने शर्मकी बात है कि आप पीछे टँगी हुई घड़ीको स्वयम् सर घुमाकर नहीं देख सकते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नौकर बुलाया गया, उससे आईना मँगाकर मुँहके सामने रखा गया और तब इस प्रकार घड़ीके प्रतिबिम्बमें समय देखा गया। इतना आलस्य !'

'मेरे दिमाग़की तारीफ़ तो न करते बना, उलटे डाँट बता रही हो। यह न कहोगी कि कैसी बात सोच निकाली! सर तकियेपरसे न हिला और पीछेकी घड़ी आगे देख ली गयी।'

'ख़ैर, कहाँ तक आपके साथ सर खपाऊँ। आज ज़रा जल्दी नींद खुल गयी है तो अब न सोइये।'

'नहीं प्यारी ! सोऊँगा नहीं, सिर्फ़ लेटा रहूँगा।'

'नहीं, उठ कर बैठ जाइये।'

'तकियेके सहारे ?'

'नहीं, उठकर, नहा धोकर कपड़े बदल डालिये।'

'कोई हाथ-पाँव बाँध कर कूएँमें ढील दे तो शायद नहा लूँ। अपनी इच्छासे तो अभी नहानेसे रहा !'

'उठिये, नहीं तो मैं चमरुआको आज्ञा देती हूँ कि वह आपके सरहाने खड़ा होकर कनस्तर बजाये।'

'मैं उठ कर मारते-मारते उसकी हड्डी तोड़ डालूँगा।'

'यही तो मैं चाहती हूँ कि आप किसी प्रकार उठें।'

'तो न मानोगी, उठाही कर छोड़ोगी ? अच्छा लो हाथ पकड़ कर उठा दो।'

मैं स्नान वगैरःसे निपटकर वापस आया। मैंने उससे कहा—'लाओ जलपानके लिए कुछ देती हो ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसने उत्तर दिया—'गरम मसालेमेंसे सात दाना काली मिर्च निकाल लीजिये और खाकर पानी पी लीजिये।'

लोग कहते हैं कि मिर्च खानेसे पित्त दब जाता है पर इस समय मिर्चका सिर्फ़ नाम सुनकर मेरा पित्त खौल उठा। मैं क्रुद्ध कर बोला—'आज मिर्च खाकर पानी पीनेको कहती हो, कल कहोगी कि थोड़ा संखिया खाकर पानी पी लीजिये। कल शामको इतने मलाईके पान जो बनाये थे वह क्या मेरे नामपर महाब्राह्मणोंको खिलाओगी?'

'मैं इस वक़्त आपको मलाईके पान न दूँगी। मैंने एक बार नहीं अनेक बार देख लिया है कि सुबहके वक़्त आपको कोई अच्छी चीज़ जलपानके लिए मिल जाती है तो आपको नींद आने लगती है और बैठकमें जाकर फिर आप सो रहते हैं।'

'मैं जानना चाहता हूँ कि तुम मेरी सोनेकी आदत छुड़ा रही हो—या मेरी ज़िन्दः रहनेकी आदत छुड़ा रही हो?'

'यह सब कुछ नहीं। मैं केवल यह चाहती हूँ कि आप प्रातःकाल शुद्ध वायुमें टहलनेकी आदत डालें और टहलनेके बाद जलपान किया करें। मकानसे लगा हुआ अपना बाग़ किस दिनके लिए है जब आप उसमें घंटे भर भी कभी नहीं टहलते?'

'साईससे कह दो कि घोड़ेको सड़कपर टहलानेके बाद मुझे बाग़में टहला लाया करे।'

यह कह कर गुस्सेसे काँपता हुआ मैं उठ कर चला आया। बाहर बैठकर मैं अपने आज तकके विवाहित जीवनका सिंहाव-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लोकन करने लगा। मैंने अपनेको हर तरफ़से सुधारोंके शिकंजेमें कसा हुआ पाया। उठते-बैठते सुधार, हँसते-बोलते सुधार, सोते-जागते सुधार! खाऊँ तो मुँह न बोले, पियूँ तो गला न बोले, सोऊँ तो नाक न बोले! अजब मुसीबतका सामना है! आज जलपान तक नौबत आ गयी, कल जान पर आ बनेगी। मेरा प्राण-पखेरू इन सुधारोंके पिंजड़ेमें कब तक फटफटायगा! अगर सुधारोंका ताँता इसी तरह जारी रहा तो वह मेरे प्राणान्त के समय भी सरहाने खड़ी हो कर कहेगी कि आँखें बन्द करके हाथ पैर सीधे करके भले आदमीकी तरह जल्दी दम तोड़िये।

इन सुधारोंके मारे मेरा कचूमर निकल रहा था—नाकोंदम हो गया था। यह अवस्था अधिक दिन नहीं टिकने की। फ़ौरन इसका इलाज सोचना होगा। सवेरे ज़बर्दस्ती उठाये जानेकी यादने कहा कि आज ही इसका इलाज सोचिये। खाली पेटने कहा कि आज नहीं, अभी इसका इलाज सोचिये।

मैं फ़ौरन घरके बाहर निकल पड़ा। अभी इसी वक्त. पं० बिलवासी मिश्रसे मिलकर कोई राय पक्की करूँगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

११

गदहपचीसी

पं० बिलबासी मिश्रके मकानपर मैं जब पहुँचा उस समय नौ बजनेमें भी कुछ कसर थी। और रोज़ इस वक्त मैं चारपाई पर लेटा हुआ सोचा करता था कि अब उठता हूँ और तब उठता हूँ—आज पं० बिलबासी मिश्रके सड़ककी धूल फाँक रहा हूँ।

बिलवासीजी अपने लिखने-पढ़नेके कमरेमें बैठे हुए थे। उनके पास कई रीम फुलिसकेप काग़ज़का एक टीला खड़ा था और सामने एक बोतल स्याही और एक दर्जन नयी क़लमें रक्खी थीं।

वे इन चीजोंको देखकर मन-ही-मन मुसकरा रहे थे पर मुझे देखते ही सारी मुसकराहट ज़ब्त करते हुए और रोनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सूरत बनाते हुए बोले—'बड़े दुःखकी बात है। कहिये यह घटना कब हुई ?'

मैंने चकित होकर पूछा—'कौन सी घटना ?'

'जाने दीजिये, रंज करनेसे क्या लाभ! जो इस संसारमें आता है वह एक-न-एक दिन अवश्य ही जाता है। वह तो वृद्धा थीं, आपके सामने उनकी बन गयी, चलिये अच्छा ही हुआ। पर कब मरीं? आपने उनकी बीमारीका ज़िक्र कभी नहीं किया था।'

'आप क्या घनचक्करकी बातें बक रहे हैं ?'

'आपकी माताका स्वर्गवास हो गया है न ?'

'क्या खूब! यह आपसे किसने कहा ?'

'मैंने अनुमान किया। आप ऐसी मनहूस सूरत बनाये थे कि जैसे किसीका दग्ध संस्कार करके आ रहे हों। आपके कुटुम्ब-में आपकी माताके सिवा मरने योग्य और कोई है नहीं, इसीसे मैंने अनुमान किया कि हो-न-हो वही............

मैंने क्षुब्ध होकर कहा—'और कुछ नहीं, आपको अक्लिका अजीरन-रोग हो गया है। मेरे मुहल्लेमें एक कुँजड़िन अपने कुँजड़ेसे कहा करती है कि देखो मियाँ, अक्ल इतनी न बढ़े कि बढ़नीसे पीट कर कम करनी पड़े। यही बात मैं आपसे भी कहूँगा।'

'अच्छा क्षमा कीजिये। कहिये कैसे चले ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'पहिले मेरे लिए कुछ जलपान मँगाइये; मैं आज सुबहसे अकाल-पीड़ित हो रहा हूँ।'

बिलवासीजीने जलपान मँगाया। अच्छा जलपान था—ताज़ी इमरतियाँ और गरमागरम समोसे थे। मैंने जलपान करते समय पूछा—'आपके सामने काग़ज़ और क़लमका ढेर क्यों लगा है?'

'कुछ पूछिये मत। आज सुबह एक बड़े प्रसिद्ध सम्पादक मेरे यहाँ आये थे—यह सब सामान दे गये और कह गये कि लेख लिख कर भेजिये।'

'ऐसी उदारता तो सम्पादक मनोवृत्तिके अनुकूल नहीं है। खैर; किन विषयोंपर आपको लेख लिखने हैं?'

बिलवासी जी एक काग़ज़को हाथमें लेकर पढ़ने लगे—'देखिये, ये विषय वे मुझे दे गये हैं :—

—युद्धमें पीठका उपयोग

—नूरजहाँके सलीपर पर एक ऐतिहासिह दृष्टि

—खड़ी बोली और उखड़ी बोली

—छायावादकी छाया और माया

—मनुष्यको दुम होती तो पतलूनके फ़ैशनपर उसका प्रभाव

—मानव-समाजपर वेश्याओंका ऋण

—घोड़ेमें दुलत्तीकी प्रवृत्ति

मैंने कहा—'विषय तो सब बड़े मारकेके हैं। कलसे इनपर लेखनी उठाइयेगा। आज मुझे आपसे कुछ राय करनी है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'कहो क्या है ?'

'यह बतलाइये कि अगर सुबह आप किसीसे जलपान माँगें और वह आपको सात दाना मिर्च खाकर पानी पी लेनेको कहे तो उसके साथ आप कैसा बर्त्ताव करेंगे ?'

'अगर अपनेसे कमज़ोर होगा तो मुँहपर और मज़बूत होगा तो मनमें गाली दूँगा।'

'पर मैं इन दोमें एक भी नहीं कर सकता। स्वयम् मेरी स्त्रीने आज मुझे मिर्च खाकर पानी पीनेका आदेश दिया।'

'तब आपने रोना, चिल्लाना और गिड़गिड़ाना शुरू किया होगा ?'

'नहीं, मैं ताव-पेंच खाता हुआ यहाँ आपसे राय करने चला आया। अब बतलाइये मैं क्या करूँ—कैसे उसे रास्तेपर लाऊँ ? यह मैं मानता हूँ कि वह हज़ारमें एक है; अपनी लुनाई और तरुनाईमें वह 'कामकी कलासी कमलासी खासी कामिनी' है। पढ़ी-लिखी ऐसी है कि मेरे ऐसे जाहिलोंको बरसों किताबोंकी चक्कीमें पीसती रहे। शील-स्वभावका यह हाल है कि मेरी वृद्धा माताको अपनी सेवाके बलपर जिला रही है। स्वयम् मेरे खाने-पीनेका इतना अधिक खयाल रखती है कि क्या कहूँ ! सदा तर माल चाभनेको देती है, प्रेमके साथ पूछ-पूछ कर। आप खुद देख रहे हैं कि मेरी कमरका घेरा दिनपर दिन बढ़ता ही जा रहा है।'

'फिर आपको शिकायत किस बातकी है ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'मेरा आदर नहीं करती। प्यारमें कोई कमी नहीं है पर आदर छू तक नहीं गया है।'

'यह आप कैसे जानते हैं कि वह आपको प्यार करती है?'

'अभी बताया न कि बड़े प्रेमके साथ खिलाती-पिलाती है। एक रोज़ ज़रा-सा सर धमक आया, सो उसने इतनी बार थरमामीटर लगाया कि बग़लमें मुझे घट्ठा पड़ गया। फिर अकसर प्यारे पुकारती है, पीठपर हाथ फेरती है, थपकी देकर सुला देती है।'

'पर यह सम्भव नहीं है कि प्यार करे और आदर न करे।'

'आदर न करनेका अर्थ यह है कि मुझे बेशऊर, नासमझ और गँवार समझती है।'

'मैं इस बातमें उससे सहमत हूँ।'

'आप सिड़ी हैं।

'आपने मुझे सिड़ी कहा पर आप जानते न होंगे कि 'सिड़ी' और 'Silly' एक ही नाप और तौलके शब्द हैं।'

'मैं इस समय आपसे भाषा-विज्ञान सीखने नहीं बैठा हूँ। वह मेरा आदर नहीं करती, न करे; पर मूर्ख और असभ्य समझनेके कारण सदा मुझे सुधारनेकी फ़िक्रमें रहती है। सबसे बड़ी तकलीफ़ मुझे इसी बातसे है। मुझे गदहेसे घोड़ा बनानेके लिए मेरे पीछे-पीछे सुधारोंकी चमोटी लिये घूमती रहती है। अभी कलकी बात है कि मुझे धोती पहनना सिखा रही थी;

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कहती थी कि आप धोतीको कमरमें बाँधनेका मुरैठा समझते हैं, उसे अच्छी तरह ढील कर और चूँनन देकर नहीं पहनते।'

'इन लक्षणोंसे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि उसके हृदयमें आपके प्रति लेशमात्र भी आदरका भाव नहीं है।'

'यही तो मैं भी कह रहा था।'

'लेकिन आप कहते हैं कि प्रेम करती है पर आदर नहीं। यह कैसे सम्भव है? जहाँ प्रेम है वहाँ आदर भी है, जहाँ आदर नहीं वहाँ प्रेम भी नहीं। दोनों एक दूसरेके सहायक और सहगामी हैं।

'इसका क्या प्रमाण है?'

'यह मनोविज्ञानका एक गूढ़ विषय है। प्रमाणके लिए देखिये श्री टुनमुनदास विशारद कृत 'प्रेम-पँवाड़ा' नामक ग्रंथ और 'मर्कट' के जूलाई वाले अंकमें मेरा 'भाव और बेभाव' शीर्षक लेख। मेरा अनुमान है कि आपकी स्त्री आपको प्यार नहीं करती, अधिकसे अधिक आपको एक पालतू जीव समझती है।'

'यह तो आपने फ़िक्रकी बात सुना दी। लेकिन प्रश्न है कि आख़िर मुझे न प्यार करेगी तो किसे प्यार करेगी?'

'क्या संसारमें आपही एक पुरुष हैं?'

मैंने इसका जवाब बिलवासी जीको हुश-दुतसे दिया और कुड़बुड़ाता हुआ घर लौट आया।

पर क्या कहूँ! एक तो बचपनसे ही थोड़ी बुद्धिहीनता अपने पाले पड़ी है, दूसरे गदहपचीसीकी अवस्था थी। मनमें यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ख़याल आ ही गया कि अच्छा क्या हर्ज, दूसरे दिन दोपहरमें सचमुच यह मुखबिरी बरती जाय। कौन जाने ! बड़ोंके अनुसार दैव भी नहीं जानते; कुतो मनुष्यः।

दोपहरमें; यही समय था जब मैं उसे छोड़कर नीचे उतरता था, और बैठकमें सो रहता था। मुझसे छिपाकर उसे जो कुछ करना सम्भव था उसके लिए यही उपयुक्त समय था।

ऐसा कुत्सित सन्देह ? उसके ऊपर ? यह बात पुरानी हुई। ईश्वरने मुझे क्षमा कर दिया। मेरे जीवनको इस बीचमें मेरी स्त्रीने मरुभूमिसे फुलवारी बना दिया है। कल कह रही थी कि आप मेरी साड़ियोंकी सूची बना दीजिये; मैं आपकी इस पुस्तक का प्रूफ़ देख दूँगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१२
कौवारोर

दूसरे दिन मैं उससे भारी बना रहा। उसकी आँखोंका जादू उस दिन बेअसर था, उसके प्रेम-प्रदर्शनकी चेष्टायें निष्फल थीं। कई बार इतनी रुखाईसे मैंने उसका जवाब दिया कि आँखें उसकी डबडबा आयीं। पर मैं पत्थर बना रहा।

दूसरे दिन मैं दोपहरसे कुछ पहिले ही खा-पीकर निपट गया। उस दिन उसने ख़ास तरहसे अच्छा भोजन बनवाया था पर मुझे स्वाद न आया। हर तरहसे हारकर उसने पेटके पास सिफ़ारिश भेजी पर वह भी व्यर्थ हुई—मैं डिगा नहीं।

एक बजेके क़रीब मैं नीचे उतरा। लोगोंने समझा कि नित्यके नियमानुसार बैठकमें सोने जा रहा हूँ। मैं बैठकमें आया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ज़रूर पर भीतर किवाड़ बन्द करके दूसरे दर्वाजेसे बाहर निकल गया।

प्रखर धूप थी। सड़कपर सन्नाटा-सा छा रहा था पर तब भी मैं कोई ऐसी जगह तलाश न कर सका जहाँ छिपकर मैं गलीसे गुज़रने वालोंपर निगाह रख सकूँ। सिर्फ़ एक जगह ऐसी थी। मेरे मकानसे सौ क़दमके फ़ासलेपर एक खँडहर है जिसमें एक बहुत बड़ा नीमका दरख्त है। इसमें नीचेकी ओर खुत्थे-से निकले हुए थे, जिसके सहारे मेरा ऐसा गरिष्ठ आदमी भी आसानीसे ऊपर पहुँच सकता था। इसके डालियोंसे मेरे मकानकी खिड़कियाँ, बग़लकी गली और उधरसे गुज़रनेवाले बखूबी देख पड़ते हैं। यह बात मुझे इस तरह याद पड़ी कि छोटेपनमें मैंने एक बार पिताजी की गुड़गुड़ीमें मिट्टीका तेल उड़ेल दिया था; वे मेरी पीठकी मरम्मत करनेके लिए अपनी कुबड़ी लेकर उठे; मैं भागकर इसी नीमपर चढ़ गया। पिताजी थोड़ी देरतक पेड़की परिक्रमा करते रहे, फिर निकट भविष्यमें मुझसे समझनेका वादा करके लौट गये।

मैं मौक़ा देखकर इस नीमके पेड़पर चढ़ गया और कुछ घनी टहनियोंके बीचमें एक कुर्सीनुमा डालपर बैठ रहा। यहाँसे मैं सब देख सकता था—ठीक उसी तरह जैसे राम झरोखे बैठ कर सबका मुजरा लेते हैं। मैं गलीकी ओर एक टक देखता रहा। कई आदमी उस गलीसे आये-गये पर किसीने ठिठककर खिड़कियोंकी ओर न देखा। कुछ समय तक तो मैं उत्साहके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

साथ गली अगोरता रहा पर थोड़ी देर बाद मुझे नींद आने लगी। एक तो शीतल छाँहमें पीठ टेककर बैठा हुआ था, दूसरे नित्य दोपहरमें सोनेकी आदत। बुरी तरह नींदने सताना शुरू किया। आँखें ढँकी पड़ती थीं। सम्भव था कि मैं डालसे लुढ़क कर नीचे गिरता और पृथ्वी छेदता हुआ रसातलको पहुँच जाता कि इतनेही में एक कुत्ता पेड़के नीचे अड़कर भूँकने लगा।

यह कुत्ता एक बिल्लीके पीछे दौड़ा था। बिल्ली उछल कर नीमपर चढ़ आयी—इसलिए कुत्तेने अपना कर्त्तव्य समझा कि डालपर बैठी हुई बिल्लीको देख-देखकर थोड़ी देर भूँकता रहे। उसने ज़रा गौरके साथ ऊपर देखा तो बिल्लीके अतिरिक्त मुझे भी पेड़पर बैठा पाया। अब उसके क्रोधकी सीमा न रही वह चौगुने उत्साहके साथ भूँकने लगा।

उधरसे चिथरू साव दूकान बढ़ाकर खाना खाने घर जा रहे थे। कुत्तेको इस प्रकार भूँकते देख उन्हें कौतूहल हुआ और वे ठिठक कर ऊपर देखने लगे। मैंने अपने शरीरका शेष भाग तो टहनियोंसे छिपा लिया था पर हाँडीसा सर और पलड़ोंसे पैर नहीं छिप सके थे। चिथरू सावने सामने जाते हुए फैल्टू डोमको आवाज़ दी; फैल्टू डोम राजू तमोलीको बुला लाया। राजू तमोली मथुरा हलवाई, सोंधू बनिया, कल्लू नाई और घीसु तेलीको बटोर लाया। सब एक टक ऊपर देखने लगे, मानो मैं गूलरका फूल था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एकने कहा—'कहो ई कौनो बानर हौ का ?'

दूसरेने कहा—'मुँहवाँ तौ बनरै मतिन देखात हौ।'

तीसरेने कहा—'नाहीं यार ई कौनो अदमी हौ।'

चौथेने कहा—अदमी हौ तौ दुप्पहरके बेरा पेड़के फुनगी पर बैठके का करत हौ ?'

पाँचवेंने कहा—'अरे दतुअन तोरत होई।'

छठेने कहा—'नाहीं निमकौड़ी बटोरत होई।'

चिथरू सावने कहा—'ई सब बात नाहीं, हमरे जानमें ई कौनो जात्री हौ, धरमसालामें जगह न रहल होई तौ पेड़े पर आयके टिक गयल हौ।'

मथुरा हलवाईने कहा—'अरे नाहीं चिथरू साव! हम बताय देईं; ई पेड़े परसे कूदके आपन परान देई—वही जौन आतमघात कहाला।'

चिथरू सावने कहा—'हाँ, इहौ ठीक हौ; पै का एक चवन्नी कै अफीम नोहर रहल। इहाँ परान देई तौ पेड़ेपर क भूत होई औ रात-बिरात हम लोगनके इहै पैंड़ासे आवै-जायेके होला।'

कल्लू हज्जामने कहा—'तब तौ एके कौनो जुगुतसे पेड़े परसे उतारै के चाही।'

लड़कोंने राय दी कि सरका निशाना ताक कर ढेले फेंके जायँ, दो-एक बार इस डालसे उस डाल फुदकेगा, फिर आपही उतर कर भागेगा।

मैं पेड़की चोटीपर था पर तब भी इन बातोंको स्पष्ट सुन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रहा था। आप समझ सकते हैं कि सुनकर मेरे हृदयको कैसी शांति और कैसा आनन्द मिल रहा था! मुझे याद नहीं है कि इसके पहिले और कभी मैंने अपनेको ऐसी अवाञ्छनीय अवस्थामें पाया था या नहीं। पेड़पर मैं–मुहल्लेका एक रईस–मुँह छिपाये हुए; और पेड़के नीचे मूर्खोंका जमघट्ट और कौवारोर!

ठीक इसी समय पं० बिलवासी मिश्र दूरसे आते हुए दिखायी पड़े। उन्हें देखकर मेरी जानमें जान आयी। पेड़के पास वे आकर रुक गये। एक निगाह उन्होंने ऊपर देखा, मैंने इशारा किया।

उन्होंने भीड़की ओर देखकर पूछा—'आप लोग इस वृक्षको घेर कर क्यों खड़े हैं?'

चिथरू सावने मेरी ओर उँगली उठाकर कहा—'देखौ साहब! ऊ न जानै कौन मनई हौ, कहाँसे आय परल हौ और पता नाहीं का करै पर उतारू हौ।'

बिलवासीजीने कहा—'क्या आप लोग उन्हें नहीं जानते? आपके मुहल्लेके रईस लालाजी हैं। आजकल बेचारे बहुत बीमार हैं—थाइसिस, कालाआज़ार, बायगोला आदि अनेक रोग हो गये हैं। आयुर्व्वेदाचार्य्य पं० मकरध्वज शास्त्रीने उन्हें बताया है कि आप नित्य नीमके दरख्तपर बैठ कर शुद्ध वायुका सेवन किया करिये।'

इस सूचनाने सबकी शंकाओंका समाधान कर दिया। लोग अपने-अपने घर जाने लगे। भीड़के छँट जानेपर मैं भी नीचे उतरा। बिलवासी मिश्र मुझे इतने अच्छे कभी न लगे थे, मैंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उन्हें गलेसे लगाकर कहा—'ऐसे वक्त आप कहाँ से आ पड़े ?'

'भक्तोंको संकटमें देखकर मैं इसी प्रकार प्रकट हो जाया करता हूँ। पड़ोसमें होनेके कारण मैं इस समय तुमसे यह कहने चला आया कि कल मैंने तुम्हारी स्त्रीके बारेमें जो बातें कही थीं वे बिलकुल बे-सिरपैरकी थीं और उनमें रत्ती भी विश्वास न करना। प्यार करती है—यही क्या कम है। आदर नहीं करती है, न करे।'

पं० बिलवासी मिश्र ठहरे नहीं, फ़ौरन वापस हो गये। मैं उस समय भी घर लौट गया होता तो कई आनेवाली विपत्तियोंसे बच गया होता पर भावी कैसे टल सकती है! अभी बहुत कुछ भोगना बदा था।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१३

घमासान

मैं राजू तमोलीकी दूकानपर बैठ गया। उसने पं० बिल-वासी मिश्रसे सुन लिया था कि मैं थाइसिस इत्यादि कई भयंकर रोगोंसे पीड़ित हूँ—इसलिए उसने मेरे बैठनेके लिये एक दरी बिछा दी।

राजूने पान दिये। पानने क्षुब्ध हृदयको शान्त किया। पेड़पर चिमगादरकी तरह लटका था, यहाँ आरामसे दरीपर बैठनेको मिला। अपनी मूर्खताका परिचय मिल गया। यह दुरुस्त है कि वह मेरा आदर कम करती थी पर मेरे लिए किसीसे भी आदरकी आशा रखना बहुत बड़ी महत्वाकाँक्षाके समान है। यह भी दुरुस्त है कि उसने मेरे पीछे सुधारोंका खटखटा बाँध दिया था पर यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कोई न कहेगा कि मेरेमें सुधारोंकी गुंजाइश नहीं थी। रह गयी सात दाने मिर्चकी बात। सब मैं भूल जाऊँगा पर यह पेटका घाव जल्दी न भूलेगा—गो प्रातःकाल मिर्चका जलपान बहुत गुणकारी माना गया है। ख़ैर जो हो गया सो हो गया, अब चलकर मेल कर लेना चाहिये।

मैंने राजूको पानके पैसे दिये और घर लौट चला। गलीके सामने पहुँचा था कि मुझे काठ मार गया। मैं आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगा। मेरे सारे सन्देह फिरसे प्रज्वलित हो उठे। बिलवासी मिश्रका मज़ाक आख़िर ठीक निकला!

मैंने देखा कि एक गोराचट्टा मुसलमान चिकनका अँगरखा और चूड़ीदार पायजामा पहने, सरपर दुअन्नी भरकी दोपलिया दिये रुकता-ठिठकता गलीसे जा रहा है। उसकी आँखें ऊपरकी ओर टँगी थीं। मेरी स्त्रीके कमरेकी खिड़कियोंपर चिक पड़ी थीं। उन्हींमेंसे एक खिड़कीके नीचे वह खड़ा हो गया और मन्त्र-मुग्ध सा ऊपर निहारने लगा। वह अपनेको भूल-सा गया था।

सहसा वह कुछ बड़बड़ाने लगा। उसके अस्फुट वाक्य मैं न सुन सका, केवल दो-एक शब्द यहाँ-वहाँ सुन पाया। वह कह रहा था—'वल्लाह..........क्या कहने हैं............कमाल है.....................ज़ोरोंपर..............गाँठ पड़ी.........न छूटेगी...............खींच लाया.............ख़ूब रही.........हज़ारमें एक...........।'

यह न कहिये! भीतरही भीतर यह गुल खिल रहा था! मेरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आँखोंका पर्दा खुल गया। यही बदमाश है जो मेरी स्त्रीका दिल मुझसे नहीं मिलने देता था। तभी तो मैं सात दाने मिर्चपर टरकाया जाता था!

मेरी आँखोंमें खून उतर आया। आज बचाको पकड़ पाया है। चले थे मजनूँ बनने! तड़ातड़ लगाऊँगा, नयी चट्टी टूट जायगी बलासे। खाल खींच लूँगा, पैरोंतले रौंद डालूँगा, गला घोट दूँगा, खून पीकर छोड़ूँगा। दो छलाँगमें मैं उसके पास पहुँचा और क़ब्ल इसके कि वह चौकन्ना हो सके मैंने अपनी ढाई मनकी लाश उसके ऊपर झोंक दी।

वह कटे हुए दरख्तकी तरह अररा कर गिरा और ज़मीन नापने लगा। उसने समझा होगा कि किसी नये प्रकारका उल्कापात उसके सरपर हुआ है या कोई बड़ी इमारत भहरा पड़ी है। उसने जो कुछ सोचा हो पर उसने उठनेकी चेष्टा भी न की, औंधे मुँह पड़ा मिट्टी सूँघता रहा और 'मरा रे—जान गयी—खून हुआ—दौड़ो—बचाओ' की आवाज़से आसमान फाड़ता रहा। मैं उसकी पीठपर सवार था और उसकी पँसलियाँ तोड़-मरोड़ रहा था—रद्देपर रद्दा देता हुआ पूरी कुन्दी कर रहा था। मैंने अपने हाथको थोड़ी देरके लिए सुरखी कूटनेका मुँगरा समझ लिया था।

शोर-शराबा सुनकर बहुत भीड़ जमा हो गयी पर किसीने बीचबचावकी कोशिश न की। अहीरोंके सरपंच खेदू सर्दार कुमक लेकर एक बारातमें जा रहे थे। वे भी इस बेपैसे-कौड़ीके तमाशेको देखनेके लिए खड़े हो गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आसपासके मुसल्मानोंको जब ख़बर हुई कि एक मुसल्मान पीटा जा रहा है तब उनके धर्मोन्मादने ज़ोर किया और वे लाठी ले-लेकर उसकी सहायताको दौड़ पड़े। मेरी पीठपर एक लाठी पड़ी भी—शब्द हुआ जैसे डंकेपर चोट पड़ी हो। अभी अनेक लाठियाँ पड़ती पर इसी बीचमें मामलेने और गहरा रङ्ग पकड़ा।

छोटेख़ाँ दर्ज़ी अपनी दूकानसे कूदा और लाठी घुमाता हुआ भीड़की ओर बढ़ा। उसकी लाठी बहक कर खेदू सर्दारकी कत्तीदार पगड़ीसे छू गयी। खेदू सर्दार इस अपमानको सह न सके। उनके मानस-सरोवरमें एक तरङ्ग उठी कि अब महज़ तमाशाई बननेसे काम न चलेगा बल्कि इस रणभूमिमें अपना कुछ कौशल दिखा देना चाहिये। वे अपने साथियोंको ललकारते हुए बगमेल टूट पड़े।

अच्छी गुत्थमगुत्थी हुई, लाठीसे लाठी बजने लगी, खोप-ड़ियाँ रँगी जाने लगीं। वीरगतिको तो कोई नहीं प्राप्त हुआ पर दुर्गति अनेकोंकी हो गयी। तमाशाई भाग खड़े हुए। मैं छटक कर दूर खड़ा हो रहा—मुझे तो लोग भूलसे गये थे। पता नहीं मेरी स्त्री यह सब तमाशा अपनी खिड़कीसे देख रही थी या नहीं।

घटनास्थलसे डेढ़ मिनटकी दूरीपर पुलिसकी चौकी थी। कुछ लोग दौड़कर यहाँ ख़बर देने गये। जमादार साहब एक पलँगपर लेटे हुए हुक्का पी रहे थे और उनके सामने एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आदमी हाथ जोड़े खड़ा था। उससे वे कह रहे थे—'नहीं जोखू सेठ! इतने कमसे काम न चलेगा, तुम मुझे सिर्फ़ पचास रुपया महीनेमें देते हो और तुम्हें पाँच सौकी आमदनी है। तुम्हारी फड़ मैं कलही तोड़ दूँगा। सौ रुपया मेरा मामूल है, इससे कममें किसीको भी जूएका अड्डा रखनेकी इजाज़त नहीं देता।'

जोखू सेठने कहा—'धर्मावतार! अब इस मुहल्लेमें चार-चार अड्डे हो गये हैं, पहिले सिर्फ़ मेरा ही था, इससे आमदनी भी अपनी कम हो गयी है। इधर रम्मन सोनारने आपको डेढ़ सौ देकर जो नयी फड़ खोली है वहाँ आप जानते ही हैं कि कोकीन भी बिकती है। इससे सब खेलाड़ी वहीं खिंच जाते हैं। मेरा अड्डा सूना होता जा रहा है। इस वक़्त पछहत्तर रुपये क़बूल कीजिये, रोज़गार चमकेगा तो और हाज़िर करूँगा।'

इतनेमें खबर देनेवाले हाँफते हुए पहुँचे, एकने कहा—'जमादार साहब! जल्दी चलिये, हिन्दू-मुसल्मानोंमें बलवा हो रहा है।'

जमादार साहबने पूछा—'कितनी देर हुई शुरू हुए?'

'अभी-अभी शुरू हुआ है।'

'तब क्या जल्दी है। अभी कम-से-कम दस मिनट तो जारी रहेगा। तबतक मैं हुक्का पी लूँगा और मेरे जवान वर्दी पहन लेंगे। चलो दस मिनटमें आता हूँ।'

दस मिनटको कौन कहे जमादार साहबको अपने जवानोंके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

साथ सजधज कर आनेमें आधा घण्टा लग गया। उस समय तक मैदान खाली हो गया था। विजय खेदू सर्दारके हाथ रही। वे अपने साथियोंको बटोरकर बारातमें शामिल होने चले गये थे और मुसलमान लोग घर लौटकर अपनी मरहम-पट्टी करा रहे थे।

पर जमादार साहब खाली हाथ नहीं लौट सकते थे, उन्होंने दस-पाँच राहचलतोंकी मुश्कें बाँध लीं और उन्हें पीटते हुए थाने ले चले। मैं अपनी बैठकमें छिप कर यह सब देख रहा था। अगर उन्होंने कुछ भी पूछताछ की होती तो मेरा पता फ़ौरन चल जाता पर उन्हें इस समय केवल एक धुन थी कि अब फ़ौरनसे पेश्तर कुछ लोग पकड़ कर थानेमें दाखिल कर दिये जायँ, जहाँ वे अपनी सफ़ाई देकर छूटते रहेंगे और नयी गिरफ़्तारियाँ होती रहेंगी। मेरी तरफ़ उनका ध्यान भी न गया। मेरे यहाँ से बराबर दीवाली-दसहरेकी त्योहारी पाया करते थे।

मैं ऊपर जा ही रहा था कि बाहरका दरवाज़ा खुला और पं० बिलवासी मिश्र दौड़ते हुए भीतर घुसे। उन्होंने हाँफते हुए कहा—'आप अभी यहाँ क्या कर रहे हैं ? भागिये, फ़ौरन भागिये, सीधे स्टेशन जाइये, जहाँ कहींकी भी ट्रेन मिले सवार हो जाइये और शहर छोड़ दीजिये।'

मैंने बड़ी बौखलाहटके साथ पूछा—'क्या हुआ, क्या हुआ ! बात क्या है कहिये तो ?'

'आपने जिस मुसलमानको मारा है वह अस्पताल भेजा गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है। उसकी हालत ख़राब है, डाक्टरोंने जवाब दे दिया। उसका Dying Declaration लिया जा रहा है। फ़ौरन भागिये, संगीन मामला है। स्त्रीसे मिलनेका भी समय नहीं है। पास में कुछ पैसे हैं? लीजिये ये पचास रुपये। इस समय कहीं खसक जानेहीमें आपकी ख़ैरियत है।'

मारे डरके मैं अधमरा हो गया। मैं उस आदमीको केवल दण्ड देना चाहता था, उसका खून नहीं करना चाहता था; लेकिन हो गया और का और—उसकी हत्या मेरे हाथ लिखी थी। मैंने पूछा—'अब क्या होगा पण्डित जी?'

'जो कुछ होगा मैं देख लूँगा। अपने भरसक आपको इस उलझनसे निकालनेकी कोशिश करूँगा, आगे आपका भाग्य जाने। अब आप फ़ौरन भागिये।'

मेरे पैर आगे न पड़ते थे पर बिलवासीजीने ढकेल कर मकानके पिछले दरवाज़ेसे मुझे बाहर किया और एक तेज़ इक्के पर बिठाकर स्टेशन रवाना कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१४

साढ़े साती

प्रेतसी दशा अपनी हो गयी थी। आज यहाँ, कल वहाँ; न मनको चैन, न तनको आराम। मैले कपड़े, दाढ़ी बढ़ी हुई, बदनपर धूलकी खोली और जेब प्रायः खाली। न खानेकी सुविधा न सोनेको स्थान। अब मैंने समझा कि ईश्वर चाहता है तो जीवन-भरका क्लेश एक सप्ताहमें ठूस देता है। सती स्त्रीपर अकारण कुत्सित आक्षेपका जो फल मुझे अगले जन्ममें मिलता वह मुझे इसी सप्ताहमें मिल गया।

यह सात दिनका समय मुझे भागते बीता था। सुबह एक जगह—संध्या दूसरी जगह और रात्रि तीसरी जगह। भयका भूत मेरे पीछे लग गया था। पुलिसकी सूरत देखकर थरथरी हिल जाती थी। एक लड़का भी अपनी ओर ध्यानसे देख लेता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तो आशंका होती थी कि 'पकड़ो, खूनी भागा जा रहा है' कहकर अब चिल्ला उठेगा। कई जगहों भागता हुआ आज सुबह प्रयाग पहुँचा।

प्रयागमें मेरी पहचानके कई लोग थे पर मैं किसीके यहाँ जानेका साहस न कर सकता था। सभी जान चुके होंगे कि मैं खूनी हूँ और देखते ही मुझे पुलिसके हवाले करेंगे। पैसे भी अपने पास अब बहुत कम थे—चलते समय बिलवासी जीने जो रुपये दिये थे; वे हर तरहकी किफ़ायत करनेपर भी अब ख़तम हो रहे थे, सिर्फ़ डेढ़ रुपया पासमें बच रहा था।

मैं प्रयागकी सड़कोंपर मारा-मारा फिरने लगा। यहाँ आनेका कोई उद्देश्य तो था नहीं, केवल एक प्रेतबाधा सी पीछे पड़ गयी थी जो जगह-जगहकी ख़ाक छनवा रही थी। इस गलीसे उस गली और इस सड़कसे उस सड़क मैं भटकने लगा। थककर कहीं दो मिनटके लिए बैठ जाता, फिर उठकर अपनी राह पकड़ता। ज्यादः देर एक जगह बैठता भी न था—कौन जाने कोई पूछ बैठे कि तुम कौन हो तो क्या उत्तर दूँगा! इसी तरह धूल फाँकता हुआ मैं प्रयाग हाइकोर्टकी ओर निकल आया; सोचकर दुःख हुआ कि अपील करनेपर यहींसे मेरी फाँसीकी सज़ा बहाल रहेगी।

रात हुई। मैंने चार पैसेके चने ख़रीदकर पेटमें डाल दिये। थककर चूर हो गया था। चलते-चलते रानें भर गयी थीं, पैरोंमें लोढ़े पड़ गये थे। जान पड़ता था कि सारे शरीरको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किसीने घनसे पीटा है। नींद आने लगी पर कहीं भी सर रखनेकी जगह नहीं। घरके मुलायम बिस्तरेको सोचकर खूनके आँसू टपक पड़े। सड़क ज्याद: चलती नहीं थी। किनारे एक पेड़के नीचे कुछ साफ़ जगह थी। वहीं पासमें एक छोटा-सा ठेला खड़ा था। उसीपर पड़ रहा। दिनभरका थकामाँदा पड़तेही मुर्दोंसे बातें करने लगा।

सुबह मेरी नींद खुली तो देखता हूँ कि मैं पासके कूड़े-ख़ानेमें पड़ा हुआ हूँ। इस अद्भुत लीलाको देखकर मेरी बुद्धि धराशायी हो गयी। चुम्बकमें आकर्षणशक्तिका होना स्वाभाविक है पर कूड़ेख़ानेमें इतनी प्रबल आकर्षणशक्तिका होना प्रकृतिके विरुद्ध है। कूड़ाख़ाना एक छात्रावासकी चहारदीवारीसे सटा हुआ था—इस लिए यह निश्चय स्कूली लौंडोंकी शरारत थी, मुझे बेसुध सोता देख उन्होंने मेरे ठेलेको खींचकर कूड़ेख़ानेमें रख दिया था।

मारे क्रोधके मैं झाँवाँ हो गया। उस समय मैं यह भी भूल गया कि मैं ख़ूनी हूँ और न्यायसे भागा-भागा फिर रहा हूँ। कूड़ेख़ानेसे बाहर निकल कर मैं रासभ-कण्ठ-विनिन्दित स्वरसे सर्कारकी दुहाई देने लगा। शोर सुनकर कुछ लोग एकत्र हो गये और क्या है क्या है पूछने लगे। मैंने अपना हाल कह सुनाया और प्रमाणके लिये उस मरी हुई बिल्लीको भी दिखा दिया जो मेरे सरहाने बतौर तकियेके रख दी गयी थी।

मेरा वृत्तान्त सुनकर लोगोंको दया आयी। उन लोगोंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मुझसे सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा कि जाने दीजिये, जो हो गया सो हो गया, अब कभी सड़कके किनारे बेफ़िक्र मत सो जाइयेगा; ठेला इसी लिए बनाया गया है कि जो निकम्मी चीज़ हो, जो 'अलाय-बलाय' हो—उसे कूड़ेख़ानेमें......

मेरा गुस्सा मन-ही-मन खौलता रहा। मेरे साथ इस तरहकी गुस्ताख़ी—लोग इन स्कूली छोकरोंको कोड़े क्यों नहीं लगाते? एक मौलवी साहबको उनके दर्जेके किसी लड़केने थोड़ी अमावट भेंट की। मौलवी साहबने उस अमावटपर अपने दाँतोंका सारा ज़ोर ख़र्च कर दिया पर वह कटा नहीं। मौलवी साहबने अमावटको उलट-पुलट कर ग़ौरसे देखा तो जान पड़ा कि वह जूतेके तलेपर जमाया गया है। मौलवी साहब अपनी बेंत लेकर उठे और मारते-मारते उस लड़केकी पीठको उन्होंने जूतेका तला बना दिया।

मैं अपनी टोपी कूड़ेख़ानेमें छोड़ आया था। लेनेके लिए भीतर गया तो टोपीके पासही एक रद्दी अख़बार पड़ा दिखायी दिया। उसपर छपे हुए एक समाचारपर मेरी निगाहें गड़ गयीं; मोटे टाइपकी हेड-लाइनमें लिखा था—'......के हिन्दू मुस्लिम दंगेका विस्तृत विवरण'

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१५

क्या से क्या !

मैं अख़बार उठाकर सड़कसे दूर जा बैठा और पढ़ने लगा। पढ़ने पर मेरी जो दशा हुई उसपर अलग एक पोथी मैं कभी लिखूँगा। लिखा था :—

'संतोषका विषय है कि······का हिन्दू-मुस्लिम विद्रोह ज़ोर पकड़नेके पूर्व ही दबा दिया गया। उत्तेजनाका विष शहरमें फैलने नहीं पाया। पहिले दिन टामसरोडके पास टेढ़ीगलीमें जो उपद्रव हुआ था उसके बाद नया उपद्रव और कहीं नहीं हुआ। उसमें कोई मरा नहीं था पर घायलोंकी संख्या नयी सूचनाके अनुसार अब १४ है जिसमें दो हिन्दू और १२ मुसलमान हैं।

'लखनऊके प्रसिद्ध कनकौवेबाज़ नवाब फ़र्ज़न्द अली इसी उपद्रवमें बुरी तरह घायल हो गये थे। उनके बचनेकी कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आशा नहीं थी। अस्पताल पहुँचाये जानेपर डाक्टरोंने जवाब दे दिया था। हर्षकी बात है कि वे अब चंगे हो रहे हैं और आशा है कि अगले मासमें होने वाले अखिल भारतवर्षीय कनकौवा दंगलमें शामिल हो सकेंगे। कहा जाता है कि डाक्टरोंके जवाब दे देनेपर एक हकीम बुलवाये गये। हकीमने उनके बदनपर माँ झेकी मालिश करायी और पतंगसे पंखा झलवाया। इस उपचारसे उनकी जान बच गयी।

'होशमें आनेपर नवाब फ़र्ज़न्द अली साहबने जो बयान लिखाया उससे इस दंगेके आदि और उत्पत्तिपर पूरा प्रकाश पड़ता है। बयान इस प्रकार है—मैं लखनऊका बाशिन्दा हूँ। मेरा नाम नवाब फ़र्ज़न्द अली शाह है। मुझे कनकौवेबाज़ीका बड़ा शौक़ है। गत वर्ष मैंने पतंगपर परेता उड़ाकर कई पदक प्राप्त किये थे। मैं दो दिनके लिए एक निजी कामसे यहाँ आया था। मंगलके रोज तीसरे पहरके कुछ बाद-अन्दाज़न चार बजे-मैं टामसरोडको पार करके टेढ़ीगलीकी ओर मुड़ा। उसी वक्त मेरी निगाह आसमानकी ओर गयी और मैं देख कर दंग रह गया। मुझे नहीं उम्मीद थी कि लखनऊके बाहर भी पतंगबाज़ीके इतने बड़े उस्ताद मिलेंगे। मैंने देखा कि दो पतंग बड़े ज़ोरोंपर एक दूसरेकी ओर बढ़े आ रहे हैं। दोनों बड़े ताव और तपाकके साथ पेंच डालकर जूझ गये। फिर दोनोंने कनकौवेबाज़ीके कैसे-कैसे पैतरे दिखलाये कि वाह-रे-वाह—मेरे गलेमें वाह-वाहकी हुटकीसी बँध गयी। मुझे जहाँतक याद है मैं वहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खड़ा-खड़ा इनकी तारीफ़में कुछ बड़बड़ाने भी लगा। ठीक इसी समय मुझे ऐसा जान पड़ा कि किसीने मेरी पीठपर एक कोल्हू ढकेल दिया है। मैं औंधे मुँह नीचे गिरा। गिरतेही मेरी पीठकर कोई सवार हो गया और लगा मुझे ज़ोरोंसे पीटने—जैसे धूपमें खटमलसे भरी चारपाई पीटी जाती है। उसने शायद क़सम खा ली थी कि मेरी हड्डियोंका बुरादा बनाकर छोड़ेगा। मैं दलदलसे पड़े हुए हाथीकी तरह चिग्घाड़ने लगा। शोर सुन-कर लोग दौड़ पड़े। मुसलमान मेरी रक्षाके लिए टूटे, हिन्दुओंने उनका सामना किया। फिर तो घमासान शुरू हो गया, लाठियाँ बजने लगीं, छुतहे घड़ोंकी तरह सर फूटने लगे। मेरी पीठपर जो सवार था वह छटककर दूर खड़ा हो गया पर मैं अपनी जगहसे न उठ सका। हिन्दू और मुसलमान दोनोंने मुझे अखाड़ेकी मिट्टी समझकर खूब पैरोंसे रौंद डाला। इसके बाद मैं बेहोश हो गया।

'पुलिसने नवाब साहबसे उस शख्सका हुलिया दरयाफ्त किया जो उनकी पीठपर सवार होकर उन्हें संसारसे जुदा कर रहा था। नवाब साहबने कहा कि वह मेरी पीठपर था, इसलिए मैं उसे देख न सका; एक बार ज़रासी झलक मिल गयी थी, सूरत उसकी लंगूरसी थी, रंग काला था और वज़नमें ढाई मनसे कम न रहा होगा।

'यह सुनकर थानेदार साहबने फ़ौरन अपनी पाकट-बुकमें नोट कर लिया—'ढाई मनका काला लंगूर'। पुलिसने आसपास-के कई मकानोंकी तलाशी ली और कई घरोंमें घुसकर औरतों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की नंगाझोरी भी ली पर यह ढाई मनका काला लंगूर कहींसे भी न बरामद हो सका। पुलिसका अब यह ख़याल है कि लँगूरके बारेमें नवाब साहबको भ्रम हो गया था, वास्तवमें कोई चोट्टा था जो दिन-दहाड़े उन्हें लूटना चाहता था।

'इस सम्बन्धमें एक बात विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। जिस गलीसे यह घटना हुई है उसके ठीक बग़लमें लाला मल्लूमलका मकान है। लालाजी उस मुहल्लेके एक रईस हैं। उसी दिन किसी बहुत ज़रूरी कामसे उन्हें कलकत्ते चले जाना पड़ा था जहाँसे अन्य कई स्थानोंमें घूमते-फिरते ये अब मकान लौट रहे हैं। कलकत्तेमें जब इन्हें इस दंगेकी खबर हुई तब फ़ौरन इन्होंने कलक्टर साहबके पास सौ रुपयेका एक मनी-आर्डर भेजा और लिखा कि मुझे अफ़सोस है कि मेरे मकानके पास ऐसी घटना हो गयी, ख़ासकर ऐसे वक्त़ जब मैं बाहर जानेके लिए स्टेशनपर आ चुका था, नहीं तो कुछ बीचबचाव करता; मेरी इच्छा है कि ये सौ रुपये घायलोंकी सेवा-शुश्रूषामें ख़र्च किये जायँ। इसके अतिरिक्त उन्होंने पचास रुपये उन पुलिसवालोंको मिठाई खानेके लिए भेजा है जिन्होंने तत्परताके साथ बलवाइयोंको गिरफ़्तार किया और दंगेको आगे बढ़नेसे रोका। दस रुपया उन्होंने हेडकान्सटेबल जोरावरसिंहको इनाम भेजा है जिसकी कलाई एक अभियुक्तको पकड़नेमें मुरक गयी थी। लाला जीकी पत्नी एक विदुषी महिला हैं। उन्होंने पाँच थान मलमल आहतोंके लिए पट्टी बनानेके वास्ते दिया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एक अफ़ीमचीको जो तमाशा देखने जाकर व्यर्थ पिट गया था लाला जीकी पत्नीने एक मास तक पौंढ़ेकी गँड़ेरियाँ देनेका वादा किया है।

'मानव प्रकृतिकी दुर्बलताका कितना अच्छा उदाहरण है कि जिन घायलोंके लिए लाला जी और उनकी पत्नीने इतना किया उन्हींमें कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि शोर सुनकर जब वे घटनास्थलपर पहुँचे तब उन्होंने स्वयम् लाला जीको नवाब फ़र्ज़न्द अलीकी पीठपर सवार—और उन्हें बुरी तरह पीटते देखा। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि सभी इसे सफ़ेद झूठ समझते हैं—स्वयम् कहनेवाले भी लज्जित होकर अपनी बात वापस ले रहे हैं।..............................
....'

मैंने इस विवरणको एक बार पढ़ा, दो बार पढ़ा, तीन बार पढ़ा—फिर भी ख़याल बनाही रहा कि मैं स्वप्न देख रहा हूँ। निश्चय करनेके लिए मैंने अपने कानोंको ज़ोरसे उमेठा—ठीक वही दर्द हुआ जिसका अनुभव पिताजी बचपनमें नित्य ही करा दिया करते थे। तब तो मैं स्वप्न नहीं देख रहा हूँ! यह सब सत्य है। मैं सब अभियोगोंसे बरी हूँ! खून, पुलिस, हवालात, सेशन, सज़ा, सब हवा! यह तो ब्योरेकी बात है कि यह सब हुआ कैसे; मकान पहुँचनेपर पूरा पता लग जायगा, पर यह बात अभीसे मेरे दिलमें बैठ गयी कि यह सब बिलवासीजीकी माया है। मुझे मकानसे खदेड़ कर वे बेकार नहीं बैठे रहे—आसमान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और ज़मीन एक कर डाला होगा तब जाकर मुझे इस तरह बेदाग़ बचा सके होंगे। अपने वादेके अनुसार उन्होंने इस भयंकर स्थितिसे मुझे साफ़ उबार लिया! अगर उन्होंने कहा भी कि तुम्हारा कान कौवा ले गया तो मुझे पहिले अपना कान टटोल लेना चाहिये था—न कि कनकौवेबाज़से भिड़ जाना चाहिये था। ख़ैर, उन्होंने जो कुछ सोचा हो—और जो कुछ तरकीब लड़ायी हो—पर यह ध्रुव सत्य है कि मुझे उन्होंने साफ़ बचा लिया। मैं उनका एहसान मानूँगा।

और मेरी स्त्री! वह साध्वी है, सुन्दरी है, सुशीला है, सर्वगुणसम्पन्ना है! मैं उसके योग्य अपनेको बनाऊँगा। उससे चलकर कहूँगा कि अब दिन-रात मेरे ऊपर सुधारोंका रंदा चला, मैं चूँ न करूँगा। मेरी आँखोंका मोतियाबिंद दूर हो गया। यह कहाँका न्याय है कि कोई मेरे मकानके नीचे खड़ा होकर पतंगकी पेंच न देखे! सारे संसारके कनकौवेबाज़ोंका यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वे मेरी गलीमें अड़कर सुबहसे शाम तक एकटक आकाशकी ओर निहारा करें। मैं मियाँ फ़र्ज़न्द अलीसे पूछकर उनकी इच्छा हुई तो उनके लिए वहाँ एक आरामकुर्सी रखवा दूँगा—गो उन्होंने मुझे ढाई मनका काला लंगूर समझा था।

कहाँ एक कूड़ाखाना—कहाँ उस कूड़ेख़ानेमें एक रद्दी अख़-बार—कहाँ उस रद्दी अख़बारमें इतनी ताक़त कि सारे विपत्तिके बादल मेरे लिए छूमन्तर हो गये। इधर सात दिनतक यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हालत थी कि उचक्कासा मारा-मारा फिरता था—लाल पगड़ी दूरसे देख पाता था तो छिपकर छिपकली हो जाता था; अब सड़कोंपर सबके सामने ऐंठकर चलूँगा। इस वक़्त पासमें काफ़ी पैसे न थे, नहीं तो फ़ौरन दो नौकर मुक़र्रर करता जो दाहिने बायें खड़े होकर मेरी मूछोंपर ताव देते।

हृदयमें प्रसन्नताका स्रोत उमड़ रहा था; उसे मैंने कहाँ खपाया यह ठीक याद नहीं है। इतना याद है कि इस समय मैंने अनेक प्रकारकी शारीरिक चेष्टायें कीं—नाचा कूदा बैठा उठा चलने लगा, फिर दौड़ा। हाँफता हुआ स्टेशन पहुँचा, टिकट लिया, गाड़ीमें सवार हुआ। गाड़ी चली, मकानकी ओर ले चली—अब पहुँचा—तब पहुँचा……यह डाक गाड़ी है पर इतनी सुस्त क्यों जा रही है?

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१६

कर्ण-प्रतिज्ञा

कवियोंने सायंकालकी प्रशंसामें अपने हृदयका सीवन उधेड़ कर रख दिया है। मैं नहीं कह सकता कि औरोंको यह समय किन कारणोंसे सुखदायी है पर मैं अपनी बात जानता हूँ—मुझे संध्याका समय अत्यन्त सुखद और सुहावना प्रतीत होता है—क्योंकि उसी समयसे मेरे दिलमें एक सरूरसा बँध जाता है कि अब सोनेका समय निकट आ रहा है।

फिर आजकी संध्याका क्या पूछना! सात वर्षके बाद आज इस समय उससे भेंट होगी; सात वर्षसे मेरा तात्पर्य्य उन सात दिनोंसे है जिन्हें मैंने उससे अलग रह कर जगह-जगह ठोकर खाते हुए बिताये थे। इतने दिनके बाद आज दो तड़पते हुए दिल एकत्र होंगे। वह रूठ गयी होगी, पर मैं अपनी बीती सुनाऊँगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तो दयासे द्रवीभूत हो जायेगी—अजब नहीं कि हृदयसे लगा ले। क्षमायाचनाके बहाने मैं उसे गोदमें बिठा लूँगा, कानोंमें बात कहनेके बहाने कपोल छू लूँगा। सात दिनतक कंकड़-पत्थरपर सोनेके बाद आज पलँगपर पीठ दूँगा—सात दिनतक खलिहानों-में पड़ा सारी रात तारे गिना करता था, आज सारी रात उसका चाँदसा मुखड़ा देखूँगा। घुलघुल कर बातें होंगी, हँसहँस कर घातें होंगी, दिलकी कली खिलेगी, उमंगोंके घाटपर मनोरथका मेला लगेगा।

दिन ढल चुका था जब मैं मकानके निकट पहुँचा। यह भी ईश्वरकी कृपा थी कि अँधेरा काफ़ी हो गया था। मेरी हैवान सी सूरत कोई देख न पाया और मैं मकान तक चला आया; अपने कपड़े ऐसे हो गये थे कि खुद अपनेको देखकर शर्म आती थी।

मैं मकानके अन्दर दाखिल हुआ और क़ब्ल इसके कि कोई खबर कर सके मैं ऊपर पहुँचा। उसके कमरेमें गया—विजयी योद्धाके समान नहीं; भींगी बिल्लीकी तरह।

वह बैठी पढ़ रही थी। मुझे देख कर किताब उसके हाथसे गिर पड़ी; और वह खड़ी हो गयी। आपने किसी पक्षीको उड़-कर अपने घोंसलेमें जाते देखा होगा; ठीक उसी तरह वह उड़-कर मेरे बाहुपाशमें आयी। उसका सर मेरे कंधेपर था—आँखोंसे मोती टपक रहे थे। मैंने पूछा—'रोती क्यों हो?' उसने सिसकते हुए कहा—'आप कहाँ गये थे?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

'कहाँ बताऊँ ? यही समझो कि अक्कके पीछे डंडा लेकर दौड़ गया था।'

'मुझसे कहकर क्यों नहीं गये ? फिर इतने दिन कहाँ रह गये ? मैं परसोंसे आपकी बाट देख रही हूँ। झगड़ा तो सब तय-तमाम हो गया।'

झगड़ेका नाम सुनकर मैंने गर्दन नीची कर ली। उसने बात फेरकर कहा—'आप अच्छी तरह तो हैं ?'

'देख लो, बिल्कुल तहज़र्द हूँ।'

'आप इधर खाते-पीते क्या रहे ?'

'अधिकतर शुद्ध वायुका सेवन करता रहा।'

'आपकी दाढ़ी बहुत बढ़ गयी है।'

'आँसुओंसे सींचता रहा हूँ।'

'आपकी कमीज़ कितनी मैली हो गयी है।'

'लेकिन दिल साफ़ हो गया है।'

'आपकी धोती भी फट गयी है।'

'बलासे फट गयी है, पहननेका फ़ैशन तो ठीक है।'

'अच्छा चलिये, कपड़े बदलकर भोजन कर लीजिये।'

'अपनेको तुम्हारे हाथ सौंप देता हूँ—झाड़पोंछ कर ठीक कर दो।'

इस सेवाको उसने सहर्ष स्वीकार किया। मैं साबुनसे माँज-धोकर साफ़ किया गया और फिर स्वच्छ कपड़ोंमें लपेट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर बैठा दिया गया। मेरे आगे भोजनकी थाली रख दी गयी। मेरी पुरानी आदत है कि भोजन करते समय मैं थोड़ी देरके लिए दुनियाकी सुध भूल जाता हूँ, फिर आजका क्या पूछना! कई दिनके बाद सुअन्नके दर्शन हुए थे, स्वयम् वही परस रही थी—श्रद्धाके साथ, आदरके साथ, आग्रहके साथ परस रही थी।

भोजनसे मैं यों भी जल्दी मुँह नहीं मोड़ता, और आज तो पुरानी कसर निकालनी थी। पिछले सात दिनके 'चनाचबेनी गंगजल' ने मुझे परलोकके योग्य बना दिया था, आज मैं फिर इस लोकके योग्य बननेकी कोशिश कर रहा था। पेटकी अन्तिम सीमा निकट आ गयी थी, पर क्या चिन्ता! नित्यका दूना भी आज न खाया तो क्या किया। मेरे बूढ़े बाबा कहा करते थे कि अबे छोकरे! मैं जवानीमें पत्थर भी हज़्म कर जाता था। (मेरा ख़याल है कि ये पत्थर हज़्म नहीं हुए थे Heredity के किसी अज्ञात नियमके अनुसार अब जाकर तीसरी पुश्तमें मेरे दिमाग़के अन्दर प्रकट हुए हैं)

बड़े-बड़े यज्ञ समाप्त हो जाते हैं, बड़ी-बड़ी समाधियाँ समाप्त हो जाती हैं—मेरी पेटपूजा भी समाप्त होनेको आयी। पहिली और दूसरी डकार तो कबूतरकी गुटुरगोंसे बढ़ कर न थी पर तीसरीने सिंहनादका रूप धारण किया। मैंने सोचा कि अब बस करूँ जिसमें कल भी खाने लायक़ रह जाऊँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मैंने उससे कहा—'बस करो, अब नहीं खा सकता। तुमने पूछ-पूछ कर इतना खिला दिया कि मैं अब अपनी जगहसे हिल भी नहीं सकता। थोड़ी देरके लिए तुम मुझे अपनी ग़ैरमनक़ूला जायदाद समझ सकती हो।'

'कुछ तो और ले लीजिये।'

'नहीं, अब अगर भगवान कृष्णके बड़े भैया भी अपने मूसलसे एक कौर मेरे गलेके नीचे ढकेलनेकी कोशिश करें तो हार जायँगे।'

'इस ज़िदपर मैं एक कौर आपको और खिला कर छोड़ूँगी।'

'मैं न खाऊँगा।'

'आपको खाना होगा।'

'खिलाओ, देखें कैसे खिलाती हो ? मैं न खाऊँगा।'

'अच्छा देखिये मेरे हाथमें क्या है ?'

'है क्या, एक लड्डू है।'

'मैं इसे क्या कर रही हूँ ?'

'अपने ओठोंसे चूम रही हो।'

'अब बताइये कि आप इस लड्डूसे कैसे इनकार कर सकते हैं ? इसे खा डालना आपका कर्त्तव्य हो गया।'

इसे सब जानते हैं कि मेरा दिमाग़ चाहे जो कुछ हो पर मैं स्वयम् पत्थर नहीं हूँ। फिर कौन ऐसा माईका लाल है जो उसके अधर-सुधा-रसमें पगे हुए लड्डूको धन्यवादपूर्वक न ग्रहण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करेगा ? नाहक उसने हाथसे उठाकर दिया, मैं तो ओठोंपरसे ही उठा ले सकता था।

भोजनके बाद उसने कहा—'आप बहुत थके हैं, अब लेट रहिये।'

यह सलाह उसे दुहरानी नहीं पड़ी—मैं लेट रहा। लेटे हुए मैंने उससे पूछा—'क्यों जी ! मुझे छमा करोगी ?'

सुधारोंका चक्र अभी भी मेरे सरपर घूम रहा था। उसने कहा—'छमा मत कहिये। छमाका शुद्ध रूप क्षमा है।'

'अच्छा शुद्ध हृदयसे मुझे छमाका शुद्ध रूप दोगी ?'

वह कुछ जवाब देने जा रही थी कि मैंने फिर कहा—'मैं एक कर्ण-प्रतिज्ञा करता हूँ।'

उसने चकित होकर पूछा—'कर्ण-प्रतिज्ञा कैसी ?'

'भीष्म और कर्णका नाम तुमने सुना होगा। भीष्म-प्रतिज्ञा और लोग भी कर चुके हैं, मैं कर्ण-प्रतिज्ञा करूँगा।'

'कैसे ?'

मैं कर्णप्रतिज्ञा करता हूँ, अर्थात् अपने कान पकड़कर प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब कभी ऐसा सन्देह तुम्हारे ऊपर न करूँगा।'

उसने मुसकराकर कहा—'उस समय आप मेरे प्रेममें पागल हो रहे थे। पागलको सब कुछ माफ़ है।'

ऐसी उदार स्त्री ! मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ। विधाताने मेरे दिमाग़की कमी भाग्यसे पूरी कर दी है। ऐसी बीबीका किसे गर्व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

न होगा—इतना बड़ा अपराध उसने क्षण भरमें क्षमा कर दिया। मैंने गर्वसे छाती फुलाना चाहा पर केवल पेट फूलकर रह गया—अधिक भोजन कर लेनेके कारण सारा चमड़ा पेट हीकी ओर खिंच गया।

उसकी कमरमें एक हलकी सी करधनी है। न जाने किस निर्दयीने उसमें आठ या दस घुँघरू पिरो दिये हैं। इन घुँघरुओं-को अपने भागका इतना गर्व है कि उठते-बैठते ये बजते रहते हैं। खैर बजते हैं तो बजें; पर संगमें मेरा हृदय नाचने लगता है—सिर्फ इसकी मुझे शिकायत है। आज तो इन्हें बजते सुनकर मेरे सरपर ठर्रा सवार होने लगा।

मैंने प्रेमसे उसका हाथ पकड़ कर कहा—'मेरी एक प्रार्थना है, मानोगी ?'

'आपने सात दिन तक बड़ी कड़ी तपस्या की है। क्या कोई वरदान माँगियेगा ?'

'हाँ, यह वरदान दो कि अब कभी इस जीवनमें सात दाना मिर्च जलपानके लिए न मिले।'

अगर किसीके तने हुए पेटको गावतकिया समझकर उसपर लुढ़क रहना, पौढ़ रहना, एवमस्तु कहनेका एक रूप है तो उसने भी एवमस्तु कहा।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१७

मगन रहु चोला

इन घटनाओंके बाद आज पहिली बार मैं क्लबकी बैठकमें शामिल हुआ। यह मैं भलीभाँति जानता था कि आज क्लबमें चारो ओरसे मेरे ऊपर फबतियोंकी चाँदमारी होगी; पर इसकी कोई चिन्ता न थी। फबतियोंके बर्दाश्त करनेका मुझे घट्ठा पड़ गया है।

पहिला वार लाला झाऊलालका था। उन्होंने मुझे देखते ही कहा—'आइये लाला जी आइये! आप कहाँ ग़ायब हो गये थे? मैं आपको दो दिन तक पिंजरापोलमें तलाश करता रहा।'

यह तो समझिये कि श्रीगणेश था। पं० मजीरानन्दने पूछा—'आपके शरीरका तीसरा खंड अब ठीक है न?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इन मूज़ियोंकी बातोंका जवाब देना और झख मारना बराबर है। मैंने अपनी अकड़को क़ायम रखना जरूरी समझा। सामने मुँशी छेदीलाल रास्ता छेंक कर खड़े थे। उन्होंने कहा—'लाला जी! आपके पास चौदह आने पैसे हैं?'

मैंने यह समझ कर कि शायद कोई आवश्यक काम आ पड़ा है फ़ौरन चौदह आने निकाल कर दे दिये। उन्होंने पैसोंको अपने जेबके हवाले किया और बोले—'जबसे आप मकानसे लापता हो गये तबसे चौदह आने पैसे मैंने आपके कारण खर्च किये। रोज अख़बार ख़रीद कर देखता था कि कहीं किसी कूएँ या तालाबमें किसी लाशके उतरानेका समाचार तो नहीं छपा है।'

चन्दनको भी यदि काफी रगड़िये तो आँच फेंक देता है। मैं कब तक क्षमा-खड्ग लिये 'अगिन परी तृन-रहित थल' बना रहता! चिढ़ कर मैंने कहा—'छेदीलालजी! यह मज़ाक नहीं है, इसका नाम है ठगना। लाइये मेरे पैसे वापस कीजिये, नहीं तो मैं क्लबके अध्यक्ष महोदयसे इसकी शिकायत करूँगा।'

'पैर पड़ता हूँ ऐसा न करियेगा। वे मुझसे बहुत अप्रसन्न होंगे। उनकी आज्ञा थी चौदह रुपये वसूल करनेकी, मैंने चौदह आनेपर ही संतोष कर लिया।'

जाने दीजिये! किसकी शिकायत किससे करूँ! सब एकसे एक बढ़कर हैं।

क्लबके अध्यक्ष हैं पं० ज़ीट बहादुर शर्म्मा। उन्होंने सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सदस्योंसे अपने-अपने स्थानपर बैठ जानेके लिए कहा। क्लबकी कार्रवाई अब बाक़ायदः शुरू हुई।

पं० ज़ीट बहादुर शर्म्माने कहा—'सज्ज़नो! आज आपने मध्यमें लाला मल्लूमल को पाकर हम सब अत्यन्त प्रसन्न हो रहे हैं। वे कहाँ गये थे और क्यों गये थे इत्यादि ऐसी बातें हैं जिनपर अब पर्दा डाल देना उचित होगा। अगर कौतूहलवश आप जानना ही चाहते हों तो इतना कह देना अलम् होगा कि वे पैदल पृथ्वी-प्रदक्षिणा करने घरसे निकले थे पर कहीं रास्तेमें स्यारकी बोली सुनकर लौट आये। इस अवसरके उपलक्षमें पं० बिलवासी मिश्र एक स्वागत गान गायेंगे और तदनन्तर कुछ भाषण करेंगे।'

इस स्वागत गानका मर्म मैं समझता था। अपने दुश्मनोंसे मैं स्वयम् निपट सकता हूँ पर ईश्वर ही मुझे इन दोस्तोंसे बचाये।

पं० बिलवासी मिश्रने अपना स्वागत गान शुरू किया।—

स्वागत मेरे प्यारे बैल।

पगहा छोरि गरे पहिरायों घंटा और हुमैल।
ताहू पै तुम सींग चलावत रही बुराई फैल।
नाँद भरी सानी तजि भागे मारी हौ बिगरैल।
ऊसर सैल भटकि जब हारे तब आये यहि गैल॥

मेरे मित्रोंको इस स्वागत गानमें न जाने क्या आनन्द मिला कि वे हँस-हँस कर दुहरे होने लगे। मैं जिधर देखता उधर ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किसीको अपने ऊपर हँसते पाता था; इसलिए मैंने छतकी ओर देखना शुरू किया।

पं० बिलवासी मिश्र अपना भाषण आरम्भ करते हुए बोले—'सज्जनो! आज जबसे हमारे मित्र लाला जीने इस क्लबको अपने शुभागमनसे सम्मानित किया तबसे अबतक आप लोगोंने उनके साथ जिन 'प्रेम-लपेटे-अटपटे' शब्दोंमें सम्भाषण किया है उसे सुनते रहकर मुझे विश्वास हो गया कि उनके आवभगतमें आप लोगोंकी ओरसे कोई कमी नहीं की जा रही है। यही उचित भी है। लाला जी एक असाधारण व्यक्ति हैं। इनकी आकृति, इनकी प्रकृति, इनके कार्य्य और उनकी बातें सभी ऐसी हैं जो अनायास हृदयमें गुदगुदी पैदा कर देती हैं। हमारे मित्र लाला जी साधारण बुद्धिमान होनेकी अपेक्षा अज्ञ-शिरोमणि होना अधिक पसंद करते हैं।

'इधर कुछ दिनों तक लाला जीकी दशा उस कौएके समान थी जो किसी घोर अँधेरी रातमें बराबर उलटा उड़ता रहा। उन्होंने नियम बना दिया है कि कोई उनकी गलीमें सर उठा कर न चले। लखनऊके प्रसिद्ध कनकौवे-बाज़ मियाँ फ़र्ज़न्द-अली साहब इसके साक्षी हैं।

'मुझे फ़िक्र है छायावादी कवियोंकी। अगर कोई छायावादी कवि लाला जीकी गलीसे गुज़रा तो उसकी क्या दशा बन जायगी? असली छापकी छायावादी कवि होगा तो उसकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आँखें अवश्य आकाशकी ओर उठी रहेंगी और उस हालतमें लाला जी उसे मुट्ठियोंमें मल डालेंगे या भट्ठियोंमें भून डालेंगे या क्या करेंगे यह ईश्वर ही जाने।

'यह मानना पड़ेगा कि किसीको सर उठाये हुए चलते देख कर आपत्ति करना बड़े अन्यायकी बात है। यह आपकी इच्छा-पर निर्भर होना चाहिये कि किसी राहसे जाते समय अपनी निगाहोंको आप कैसे और किस तरफ़ फेरेंगे। मेरे एक मित्रका हाल सुनिये। दस मिनटके अन्दर उन्हें अपनी आँखोंको हर सम्भव तरीक़ोंसे घुमाना पड़ा। एक गलीसे जाते समय कुछ स्त्रियोंको घूरनेके लिये आँखें उठानी पड़ीं, फिर उनके साथ एक मर्दको देखकर आँखें झुकानी पड़ीं, एक हट्टे-कट्टे चाइयाँको किसी बच्चेके बदनसे ज़ेवर नोचते देख आँखें—वीरतापूर्वक—बन्द कर लेनी पड़ीं, फिर जब उसी चाइयाँने उन्हें दे मारा और जेबसे उनकी घड़ी लेकर चम्पत हुआ तब हक्काबक्का होकर आँखें नचानी पड़ीं।

'आप कहियेगा कि इस प्रकारके नियम केवल असभ्य देशोंमें संभव हैं; पर आप भारतको क्या समझते हैं? भारत अभी बिल-कुल ठेठ गँवार है। यह देश कैसे सभ्य कहलायगा जहाँ बड़े-बड़े शहरोंमें भी ऐसे हिन्दुस्तानी क्लब नहीं हैं जहाँ टेनिस खेलनेके बाद शामकी झुलमुलीमें मेरी बीबी आपके साथ और आपकी बीबी मेरे साथ कहीं अलग बैठ कर घर-गृहस्थीके झंझटको भूल सकें? कपड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पहनने तककी तमीज़ अभी हम लोगोंको नहीं है। मर्द पहनते हैं धोती कुर्ता या अचकन पायजामा—कुछ पताही नहीं चलता कि शरीरका कौनसा हिस्सा कहाँपर है। कहाँ यह गँवारू पोशाक और कहाँ कोट पतलून, जिन्हें पहनते ही अङ्गप्रत्यङ्गका विन्यास झलकने लगता है—सब खाला-ऊँचा स्पष्ट हो जाता है। औरतें अपना सारा बदन धोती कुर्त्तीसे ढाँक लेती हैं—सभ्य देशोंकी स्त्रियोंके समान कम-से-कम आधी छाती और पूरी कमर तो दिखलाते रहना चाहिये। भारत उस समय तक सभ्य नहीं कहला सकता जबतक कि यहाँ नगर-नगरमें रेसकोर्स न बन जायँ, मुहल्ले-मुहल्ले सिनेमा न चल जायँ, घर-घरमें डाइवोर्स न होने लग जायँ।

'आशा है इस विषयान्तरके लिए आप लोग मुझे क्षमा करेंगे। मुझे निश्चय है कि लाला जी अपने जीवनमें अभी बहुत कुछ कर दिखायेंगे। उनकी प्रेमपुत्तलिकाको इसका गर्व होना चाहिये कि वे उसके लिए लोगोंका राह चलना बंद कर सकते हैं, आकाशकी ओर देखना बंद कर सकते हैं और आवश्यकतानुसार दो-एक खून भी कर सकते हैं। लाला जी वास्तवमें क्या चीज़ हैं यह बादकी पीढ़ियाँ ज्यादः खुले शब्दोंमें कह सकेंगी। अगर वे घर लौट कर न आते और सदाके लिए ग़ायब हो गये होते तो क़बने उनकी पावन स्मृतिमें एक ख़ैराती पागलखाना बनवानेका निर्णय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किया था। हर्षकी बात है कि वे लौट आये। देखिये सामने बैठे हैं, नाखून चबा रहे हैं। खुद वही हैं, उनका प्रेत नहीं है छूकर देख लीजिये। मैं यह जानकर और भी प्रसन्न हूँ कि जबसे वे लौटकर आये हैं तबसे उनकी स्त्री उनका लालन-पालन बहुत अच्छी तरह करती है। उन्हें बधाई है।'

इस भाषणके समाप्त होनेपर इतने ज़ोरोंकी हर्षध्वनि हुई कि लाला घासीराम जाग पड़े और कुछ करना ज़रूरी समझकर गाल बजाने लगे। मैं पं० बिलवासी मिश्रके भाषणपर कुढ़ ज़रूर गया था पर उनकी लच्छेदार बातोंने और कहनेके तर्ज़ने मेरे ऊपर भी अपना इन्द्रजाल डाल दिया।

पं० ज़ीटबहादुर शर्माने कहा—'शायद लाला जी पं० बिल वासी मिश्रको कुछ उत्तर देना चाहते हों, इसलिये मैं उन्हें दस मिनटका समय दे रहा हूँ।'

दो सदस्योंको वाग्युद्धमें फँसाकर तमाशा देखना क्लबकी एक पुरानी चाल है। मैं पं० ज़ीटबहादुरकी चालमें न आया। बिलवासी मिश्रसे मोरचा लेना मेरे ऐसोंका काम नहीं है। मैंने बात बहलाते हुए कहा—'पं० मजीरानन्दजी! आप संगीत प्रेमी जीव हैं। इस खुशीके मौक़ेपर कोई गाना गाइये।'

पं० मजीरानन्दसे विशेष आग्रह नहीं करना पड़ा। उन्होंने गाया—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आखिर जिया जइहैं, मगन रहु चोला।
आवत जात कोई नहिं देखत कितने उतरि गइलैं टोला॥
कहैं कमाल कबीरके बालक मालिक हैं बम् भोला।
राम करैं सोई होला, मगन रहु चोला॥

मगन रहु चोला! कैसी अच्छी सलाह है! हम-आप इसे अपना सिद्धान्त-वाक्य बना लें। इस दुःखमय संसारमें इसकी यथार्थता पगपगपर सिद्ध होगी। चारो ओर दुःख, भय, क्लेश और सन्तापका दौर-दौरा है। रोना, झीखना, हाय मारना और सर पीटना सब व्यर्थ है। यदि हृदयकी व्यथा न माने तो अकेले बैठ कर रो लीजिये पर संसारके सामने आइये तो हँसता हुआ चेहरा लेकर आइये। हँसिये, पागलोंकी तरह हँसिये, पर हँसिये जरूर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आनन्द पुस्तक भवन
पहड़िया : वाराणसी-२
कार्यालय : औसानगंज, वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE